।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
के जीवन से जुड़े हुए...

40

पावन प्रसंग

प्रस्तुतकर्ता
'साधक'
प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम
श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के

जीवन से जुड़े हुए

40

पावन प्रसंग

संकलन एवं सम्पादन

'साधक'

प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम

श्री अमरापुर दरबार (डिब्ब), जयपुर

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 1

'सेवा – भक्ति'

योगी महापुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रातःकाल शीघ्र उठकर सभी संत– महात्माओं एवं सेवादारियों को उठाकर पूरे आश्रम की साफ– सफाई सेवा कार्य करवाते थे, फिर सभी से नाम– स्मरण का अभ्यास करवाते थे। महापुरुष अध्यात्म के साथ– साथ स्वावलम्बन की शिक्षा भी देते थे। कभी– कभी तो सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्वयं ही साफ – सफाई सेवा कार्य कर लेते थे। प्रातःकाल उठकर संत– सेवादारी देखते, तो बड़ा आश्चर्य होता, आज पूरे आश्रम की साफ – सफाई कैसे हो गयी? किसने की.. ?

इसी प्रकार एक समय जब श्री अमरापुर स्थान में चैत्र मेला चल रहा था। भक्तों की बहुत भीड़ आई हुई थी। चारों ओर कचरा ही कचरा, जूते – चप्पल इधर– उधर बिखरे पड़े थे। अनेक जूते – चप्पलों पर रेत व गन्दगी लगी हुई थी। तब नियमानुसार ब्रह्मवेला में उठकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आश्रम का अवलोकन कर रहे थे। उस समय स्वामी जी ने किसी को नहीं उठाया– और स्वयं ही आश्रम की साफ – सफाई की, साथ ही एक कपड़ा लेकर सभी के जूते – चप्पलों को साफ करके अच्छी तरह से जमा कर रख दिए। देखो! स्वामी जी में कितनी ना निष्कामता – निर्मानता थी! इतने बड़े योगी महापुरुष! पर तुच्छ से तुच्छ सेवा कार्य से भी पीछे नहीं हटना.... कहना तो सरल होता है पर ऐसा तुच्छ कार्य करना बहुत ही कठिन.... महाराज श्री मे 'कथनी और करनी' दोनों समान रूप से थीं।

ऐसे महापुरुष के पवित्र प्रेरणा प्रसंग सुनते है, तो हृदय द्रवित हो जाता है। श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है... हमें भी महापुरुषों से ऐसी सुंदर प्रेरणा लेनी चाहिए।

शत– शत नमन.... धन बाबा सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 2

संत होते हैं, कृपा–निधान

एक समय युगपुरुष सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक सूरदास भिखारी बालक दिखाई दिया। वह बालक बड़े ही मीठे स्वर में भजन की पंक्तियाँ गाकर भीख माँग रहा था। युगपुरूष गुरूदेव स्वामी जी ने उसे देखा। स्वामी जी उस बालक के पास गये। सिर पर हाथ रखकर बड़े दुलार – प्यार से पूछा– बेटा! 'यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो'? बालक ने कहा– 'बाबा जी! रोटी खाने के लिये, अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा, तो घर वाले मुझे भोजन (रोटी) नहीं देंगे।'

स्वामी जी का दिल पसीज गया और उस बालक के ऊपर दया आ गई। महापुरुष तो कृपा निधान, दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का दुःख– दर्द देखा नहीं जाता। तब स्वामी जी ने कहा– बेटे! केवल रोटी के लिए ये 'भीख माँगने' जैसा तुच्छ काम कर रहे हो। चलो! हमारे साथ– आश्रम पर सेवा करो, भरपूर भोजन – प्रसाद पाओ और भजन –सुमरण करो। इतना सुनकर बालक प्रसन्न हो गया और स्वामी जी के साथ आश्रम पर आ गया।

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत– सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा– 'कौन इसका ध्यान रखेगा? कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणा निधान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा– 'सभी में प्रभु– परमात्मा निवास करते हैं। हम सब उसी की संतान हैं। इस बालक की सेवा "मैं" स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा।' ऐसा सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। देखो! दिव्य महापुरुषों की करूण– निर्मानता, कितना स्नेह, कितना दुलार!

कहते हैं – कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारँगत गायक (गवैया) बन गया और जीवन भर गुरु आश्रम की खूब तन मन से सेवा करता रहा। नित्य नये– नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को सुनाता रहा।

ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

श्री गुरुदेव भगवान को कोटि – कोटि वन्दन....धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज...

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 3

परम उदारता व दयालुता

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में अनन्त सद्गुणों के भण्डार में उदारता का विशेष गुण था।

एक बार श्री अमरापुर दरबार, टंडाआदम में चैत्र का मेला चल रहा था। भण्डारे में आसपास के बहुत ग़रीब अनाथ आये हुए थे। वे खाते भी थे और ले भी जाते थे। सेवाधारी संत उन्हें भोजन खिला रहे थे। एक माता बार – बार भोजन लेकर झोले में डाल रही थी – उसके पुनः माँगने पर सेवाधारी ने देने के लिए मना किया। इस पर वह माता जोर – जोर से स्वामी जी को पुकारने लगी। सत्गुरु महाराज जी को तो, जो भी दिल से कहीं भी याद करते हैं – गुरु महाराज जी वहाँ उपस्थित मिलते है! स्वामी जी हाथ में लाठी लिए घूमते हुए वहाँ आ पहुँचे। माता ने स्वामी जी को शिकायत की – कि आप तो कहते हैं कि, खूब भण्डारा प्रसाद आकर खाओ और..... आपके सेवाधारी हमें भोजन नहीं देते हैं.....

स्वामी जी ने संत की ओर देखकर कहा – इन्हें चावल क्यों नहीं दे रहे हो? तब संत ने उस माता का झोला उल्टा कर दिया – उसमें बहुत सारे चावल भरे हुए थे। सत्गुरु महाराज जी ने संत से पूछा – ये फिर और क्यों माँग रही है? संत ने कहा – महाराज जी! ये बहुत ग़रीब हैं – ये चावल ले जाकर इन्हें सुखाते हैं – फिर जिस दिन मजदूरी नहीं लगती, उस दिन इन्हें पुनः पकाकर खाते हैं। उनकी ऐसी स्थिति सुनकर स्वामी जी का दिल पसीज गया – उनकी आँखो में जल भर आया। उन्होंने संत जी से कहा – ये जितना माँगे, उतना देते रहो.....

इतनी उदारता एवं प्रेम भाव से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भण्डारा – प्रसाद चलाते थे।

कोटि कोटि नमन! धन धन सद्गुरु साईं टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 4

भगवान की होटल (अतिथि सेवा)

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भेदभाव रहित होकर संत – साधु – राहगीर – मुसाफिरो की तन – मन – धन से खूब सेवा किया करते थे। उनके लिए कोई भी अपना – पराया नहीं हुआ करता था। सभी के प्रति समदृष्टि। कोई भी उनके यहाँ आ जाता, तो उन्हे प्रेम से भरपेट भोजन – भण्डारा जरूर खिलाते थे। उनका कहना था कि, सभी में भगवान की व्यापकता है। सब कुछ भगवान का ही प्रसाद है।

इसी प्रकार एक बार दोपहर के समय खण्डू गाँव में जब सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज घर के बाहर खड़े थे। तब एक अंग्रेज अधिकारी घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था। स्वामी जी को बाहर खड़ा देखकर रुक गया और उनसे पूछा – यहाँ कोई अच्छी सी होटल है, जहाँ हमें कुछ खाने – पीने के लिए मिल जाए, हमें बहुत भूख लगी है। स्वामी जी ने कहा – हाँ, हाँ नीचे उतरो – यहीं पास में ही बहुत बढ़िया होटल है। वहाँ आपको बहुत स्वादिष्ट भोजन मिलेगा।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज बिना कुछ बोले उस अंग्रेज को स्वयं के घर पर ले आए और 'अतिथि देवो भवः' की वैदिक उक्ति को चरितार्थ कर उसे बड़े स्नेह – भाव से बैठाकर, जो घर का सादा भोजन बना हुआ था, उसे बड़े प्रेम – भाव से खिलाया। घर का सादा भोजन खाकर और लस्सी (छाछ) पीकर वह अंग्रेज बड़ा ही तृप्त हो गया और बहुत प्रसन्न हुआ।

जब उसने गुरु महाराज जी से खाने के पैसे पूछे? तब सत्गुरु महाराज जी ने कहा – बेटा! यह भगवान की होटल है.. इसमें पैसे नहीं लगते!

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सभी दीन, दुःखी, गरीब, अनाथ, मुसाफिर एवं राहगीरों की सेवा बड़े प्रेम भाव से किया करते थे।

शत – शत नमन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 5

अतिथि देवो भव:

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में निर्मानता के साथ – साथ सेवा का भी विशेष गुण था। किसी भी सेवा कार्य में वे कभी भी शर्म महसूस नहीं करते थे। कितनी भी पद – प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाने पर भी वे कभी सेवा से पीछे नहीं हटे। ऐसा उनके जीवन काल में अनेको बार देखा गया। गुरु महाराज जी में कथनी के साथ साथ करनी भी विद्यमान थी।

एक समय की बात है। दोपहर का समय था। कुछ अतिथि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सतसंग श्रवण करने के लिए श्री अमरापुर दरबार 'डिब' पर आये। उन्होंने कभी गुरु महाराज जी के दर्शन तक नहीं किये थे– उनका नाम – यश – कीर्ति सुनकर ही दर्शन करने के लिए आये थे। दिन के समय सभी संत–सेवादारी विश्राम कर रहे थे। उस समय गुरु महाराज जी ही जाग रहे थे। वे अतिथि स्वामी जी से मिले और पूछा– स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहाँ हैं? हम सब उनके दर्शनों के लिए बहुत दूर से आये हैं।

इस पर गुरु स्वामी जी ने कहा– 'पहले आप लोग भोजन प्रसाद ग्रहण करो, विश्राम कर लो। शाम को दर्शन कर लेना।' उस समय स्वयं स्वामी जी ने अपने हाथो से साफ – सफाई कर भोजन खिलाया, ... जल पिलाया और आराम के लिए आसन दिया।

दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता है किन्तु स्वयं उस पर चलना होता है बड़ा कठिन। परन्तु स्वामी जी में कथनी और करनी एक समान थी।

सांयकाल जब अतिथि स्वामी जी के दर्शन करने पहुँचे, तो देखकर हैरान हो गए– अरे। इन्होंने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी– भोजन खिलाया, जल पिलाया और आसन दिया।

ऐसे निर्मानी संत – महापुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य– धन्य हो गए.... हमारा जीवन सफल हो गया।..

कोटि कोटि नमन....! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 6

गुरु भक्ति (सेवा) का फल

शास्त्रों में सेवा का बड़ा महत्व बतलाया गया है। सेवा भी एक प्रकार की ईशभक्ति होती है। गुरु की सेवा यानि भगवान की सेवा। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है। तन के द्वारा की गई सेवा अहंकार व अभिमान को चूर करती है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी गुरू की सेवा तन्मयता श्रद्धा – भाव से किया करते थे। जिसके फलस्वरुप आज उनका इतना यशोगान हो रहा है। ये सब सेवा का ही फल है। सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है।

सिन्ध प्रदेश में एक समय बड़ी भारी सत्संग सभा लगी हुई थी – दादा गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज के मुखारविन्द द्वारा हजारों श्रद्धालुजन सत्संग गंगा का अमृत पान कर रहे थे। सत्संग समाप्ति पर गुरुदेव दादा आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी से कहा– किसी सेवादारी से कह दो– कि हमारे जूते (चरण पादुका) ले आए... श्री गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वयं स्वामी जी चरण पादुका मस्तक पर रखकर भरी सभा में श्री गुरूदेव के पास लेकर आए।

दादा गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज ने जब स्वामी जी को चरण पादुका मस्तक पर लाते हुए देखा... बड़े गद्गद् हो गये। बड़ा आश्चर्य भी हुआ और स्वामी जी को प्रेम भाव पूर्वक अपने हृदय से लगा लिया। दादा गुरू साईं मन ही मन सोचने लगे – 'टेऊँ'! तुम धन्य – धन्य हो! तुम्हारे इतने हजारों शिष्य सेवक होते हुए भी तुम स्वयं भरी सभा में हमारे जूते अपने मस्तक पर रखकर लाये! तुमने हमारा दिल जीत लिया। ऐसे शिष्य धन्य – धन्य हैं। जिसके मन में गुरू के प्रति इतनी निष्ठा व समर्पण भाव हो। ऐसे शिष्य स्वयं का नाम तो उज्ज्वल करते ही हैं, साथ ही गुरू की यश – कीर्ति को भी बढ़ाते हैं।

दादा गुरुदेव श्री साईं आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी का ऐसा स्नेहात्मक सेवा भाव देखा तो सहज ही हृदय से आशीर्वाद निकला 'टेऊँराम तुम धन–धन हो – तुम्हारे माता – पिता भी धन – धन हैं, जो ऐसे सुसंस्कारी बालक को जन्म दिया – तुम्हारी सदैव जय – जयकार होगी – यश– कीर्ति बढ़ेगी। टेऊँराम.... तुम्हारा नाम सदैव अजर अमर रहेगा – सारा जहान तुम्हारे सामने नत मस्तक होगा।' गुरुदेव दादा जी का आशीर्वाद फलीभूत हुआ।

गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज के आशीर्वाद से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की यश – कीर्ति चहुँ ओर दिनों दिन बढ़ती रही है..... आज सारे जहान में स्वामी जी की जय – जयकार है। ये सब 'गुरु – सेवा' का फल है।

ऐसे सेवा अवतारी श्री गुरुदेव जी को हमारा शत – शत नमन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 7

कंडी वृक्ष ने छोड़े अपने कटीले काँटे

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रकृति से विशेष लगाव था। सृष्टि के हर एक पेड़, पौधे, वनस्पति से स्नेह – प्रेम किया करते थे। बिना कारण प्रकृति की किसी भी वस्तु को नुकसान नहीं पहुँचने देते थे।

एक समय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से किसी सेवाधारी ने कहा – हे प्रभु! श्री अमरापुर स्थान पर लगे हुए कंडी के वृक्ष को कटवा दें; क्योंकि आने – जाने वाले भक्तों व सेवाधारियों को इस वृक्ष के काँटे चुभते हैं। साथ ही आँधी तूफान आने पर इसके काँटे आश्रम में चारों ओर बिखर जाते है – जिसके कारण काँटे चुभने पर सभी को बड़ी पीड़ा होती है।

सत्गुरु महाराज जी ने कहा – 'वृक्ष – पेड़ – पौधे प्रकृति की अनमोल धरोहर है। इसे काटना नही चाहिये। इनसे हमें छाया व शुद्ध हवा मिलती है। इनके नीचे बैठकर भजन – ध्यान – सुमरण में सभी साधकों का मन लगता है। आप इसे काटो नहीं, हम वृक्ष से कह देते हैं, आगे से ये काँटे न बिखेरे..'

कौन समझे संत महात्माओं की रहस्यमयी लीलाओं को! बस! कह दिया वृक्ष देवता को..... आज के बाद काँटे नही बरसाना। महापुरुषों की वाणी सत्य हुई। भक्ति में होती हैं अद्भुत शक्ति। उस दिन के बाद कंडी वृक्ष ने हमेशा – हमेशा के लिये अपने काँटे बरसाने बंद कर दिये।

गुरु महाराज जी के वचनों में थी अनन्त शक्ति... जिसके प्रताप से कंडी वृक्ष ने काँटे बरसाने बंद कर दिए.....

शत– शत नमन! धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 8

अनन्य बाल प्रेमा–भक्ति

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली सहित भजन – संकीर्तन करते किसी शहर में पधारे। उस शहर के प्रेमी – भक्त गुरु महाराज जी को देखकर बड़े प्रसन्नचित हुए। स्वामी जी का सत्संग – भजन श्रवण कर लोग बड़े गद्–गद् हुए। सत्संग समाप्ति पर सभी लोग सद्गुरु महाराज जी को माथा टेककर आशीर्वाद लेने लगे। कोई भक्त भेंटा तो कोई प्रसाद लेकर आता तो कोई फूल माला पहनाता.... सभी आशीर्वाद ले रहे थे। इस बीच एक छोटा– सा अबोध बालक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास आया। माथा टेककर बड़े ही भाव से स्वामी जी का हाथ पकड़कर कहता है – ये लो बाबा! पैसे...

उस जमाने में पाई – पैसे चलते थे। उस छोटे– से बच्चे ने, वे पैसे स्वामी जी को दिये। बाल–लीला देखकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मंद – मंद मुस्कराते हुए उस बालक से कहने लगे– 'मैं इसका क्या करूँ? यह पैसे तुम हमें क्यों दे रहे हो?'

बालक तो बालक ठहरा। बच्चा कहता है– 'बाबा जी! इसे आप खर्चना – बिस्कुट – टॉफी लेकर खाना.....' उस नन्हें मुन्ने का प्रेम भाव देखकर गुरु महाराज जी बहुत प्रसन्न हुए। स्वामी जी ने पुनः कहा– 'ये मुझे क्यों दे रहे हो?' तो बालक कहता है– 'ये सब भी तो आपको दे रहे हैं.... तो मेरी दिल भी हो गई..... मैं भी आपको पैसे दूँ..... मैं अपने पिता जी से खर्ची लेकर आया और मैंने आपके आगे रख दी! सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उसके निर्मल भाव को देखकर बड़े प्रसन्न हुए। इसे कहते हैं – स्वच्छन्द प्रेम – शुद्ध भाव!

इसलिए जितना हो सके, माता – पिता, बड़े – बुजुर्ग अपने बच्चों को मंदिर, सत्संग व संतो के पास लेकर जायें, जिससे बच्चे गुणवान् व संस्कारवान् बनेंगे।

कोटि – कोट वन्दन.... धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 9

संत वचन में शक्ति (भक्ति में शक्ति)

सिन्ध प्रदेश के टण्डे आदम में रेतीले टीले के ऊपर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की 'श्री अमरापुर दरबार' 'डिब्'! उस समय खाने – पीने का अभाव था। सीधे – सादे संत – महात्माओं का निवास स्थल। आश्रम पर निर्माण का कार्य चल रहा था। लोगों का पहुँचना भी बहुत कठिन था।

एक समय खाने के लिए आश्रम पर कुछ भी नहीं था। भूख से सभी संत – सेवादारी व्याकुल थे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी निर्विकल्प समाधि में लीन.... तब सभी संत स्वामी जी के पास आए और कहा– हे प्रभु! दीनानाथ! आज आश्रम पर भोजन की कुछ भी सामग्री नहीं है। सभी संत – महात्मा भूख से व्याकुल हो रहे हैं। हे कृपानिधान! दया कीजिये! महापुरुषों की अपनी मौज.... अवधूती मस्ती का आलम.... इतना सुनकर गुरु महाराज जी ने कहा– ऐसा करो एक देग (तपेले) में जल व आश्रम की रेत डालकर अग्नि पर रखकर और ढक्कन से ढक दो! भोजन के समय पर 'सत्नाम साक्षी....महामन्त्र–' 2–3 बार बोलकर भण्डारा पंगत शुरू कर देना.....

कौन समझे संत – महापुरुषो की अद्भुत रहस्यमयी लीलाओं को! संत वचन में होती है अद्भुत शक्ति! देखते–ही–देखते समय पर उस रेत – पानी से नमकीन चावलो की देग (तपेला) तैयार हो गया – यह कौतुक देखकर सभी बड़े आश्चर्यचकित हुए! कहाँ तो पानी और मिट्टी और कहाँ ये भोजन..... ये सब कैसे हो गया? हम सब की समझ से बाहर! आज तक उस फ़क़ीर स्वामी टेऊँराम जी महाराज की लीला को कोई नही समझ पाया....

सभी ने आराम से भरपेट भोजन – प्रसाद ग्रहण किया। तभी तो कहा गया है कि भक्ति में होती है अद्भुत शक्ति! संत – महापुरुषो की ऐसी अद्भुत शक्तियों को समझ पाना बड़ा कठिन है। धन्य धन्य हैं ऐसे संत महापुरुष....

कोटि कोटि वन्दन...! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 10

सिंह ने भी किया गुरुदेव को नमन

श्री अमरापुर दरबार 'डिब्', ... दोपहर का समय... आश्रम के चहुँ ओर घना जंगल ही जंगल...!

एक बार दोपहर काल के समय स्वामी गुरुमुख दास जी एवं एक – दो संत भ्रमण कर आश्रम की देखरेख कर रहे थे। अचानक दूर जंगल की झाड़ियों से एक सिंह (शेर) श्री अमरापुर स्थान पर आ गया। उस वक्त कोई भी सेवादारी या संत – महात्मा नहीं थे। केवल एक – दो संत और स्वामी गुरुमुखदास जी ही निगरानी कर रहे थे। शेर देखकर संत भयभीत होने लगे। अब क्या किया जाए? कुछ समझ नहीं आ रहा था। तब तक शेर आश्रम में इधर– उधर चक्कर लगाने लगा– कोई भी नुक्सान न पहुँचा कर काफी समय तक चहुँ ओर भ्रमण करता रहा.....

कौन समझे उस मूक प्राणी की भाषा को?आखिरकार कुछ समय के बाद सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कुटिया के समक्ष बैठ गया।

कहते हैं– वह हिंसक शेर आँख मूंद कर दोनों पंजों से हाथ जोड़कर बैठ गया! दर्शनों की लालसा से वह शेर तब तक बैठा रहा, जब तक कि गुरु महाराज जी कुटिया से बाहर नहीं निकले। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चेहरे पर था अद्भुत तेज! गुरु महाराज जी ने देखा– सामने हाथ जोड़कर एक शेर बैठा है! स्वामी जी ने उस मूक प्राणी पर अपनी दिव्य कृपा दृष्टि की।

वह शेर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष काफी देर तक बैठकर दिव्य दर्शन करता रहा। उसके हाव–भाव से स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था कि स्वामी जी के दर्शनों से वह कितना आनन्दित हो रहा है और अपने आपको धन्य – धन्य मान रहा है। कुछ देर बाद सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में झुककर प्रणाम किया– पंजों से हाथ जोड़कर दर्शन किया। स्वामी जी ने भी बड़े ही दुलार से उसके मस्तक पर कृपा का हाथ रखा। आशीर्वाद पाते ही वह बहुत गद्गद् हो गया। कुछ समय बाद वह शेर अपनी मस्ती व प्रसन्न मुद्रा में पुनः जंगल की ओर लौट गया.....

ऐसे दिव्य महापुरुषों के आगे हिंसक से हिंसक मूक प्राणी भी नत मस्तक हो जाते हैं....

कोटि– कोटि वन्दन...! धन–धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 11

भगवान की अनन्य कृपा

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जब 'श्री अमरापुर दरबार' 'डिब' पर कण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर भजन – साधना किया करते थे। उस समय वहाँ कुछ भी खाने–पीने की व्यवस्था नहीं रहती थी। केवल जंगली पेड़ – पौधे। अब देखो लीला पुरुषोत्तम महापुरुषों की अद्भुत लीला!

एक समय सभी संत–महात्मा एवं सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भजन – कीर्तन कर रहे थे। तभी वहाँ एक "मुहर्रम" नाम का मुसलमान आया। वह बड़े ही ध्यान पूर्वक सत्संग श्रवण और स्वामी जी का दीदार – दर्शन करने लगा। दर्शन करने मात्र से उसके हृदय में गुरु महाराज जी के प्रति अथाह श्रद्धा भाव व प्रेम जाग्रत हो गया। बार – बार एकटक नज़र से गुरुदेव को निहार रहा था। मानो उसे कोई रब़ मिल गया हो.... प्रेमाश्रु बहाकर गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में आकर कहने लगा– 'हे फकीर साईं। आज मुझे आपमें साक्षात् रब – अल्लाह के दर्शन हो रहे हैं – आप साधारण मनुष्य नहीं हैं.... आप तो ईश्वरीय अवतार हैं... मैं आपका दर्शन – दीदार कर धन्य – धन्य हो गया। हे फकीर साईं! हमारे खेत और घर इस जंगल के पास में ही हैं– कोई भी सेवा इस दास के लिए हो तो यह दास हर समय हाज़िर है।' बस फिर क्या था– महापुरुषों की आशीर्वाद उसके ऊपर हो गई और वह प्रतिदिन संत–महात्माओ के लिये आटा, दूध और राशन सामग्री सेवा में लाने लगा।

जिसको भगवान पर पूर्ण विश्वास होता है– भगवान उसके निमित्त मात्र बनकर सब कार्य कर देते है। इसी के साथ – साथ जिसके ऊपर स्वामी जी की कृपा दृष्टि हो जाती थी, उसका जीवन भी धन्य – धन्य हो जाता था। महापुरुष अपनी कृपा कब किस के ऊपर कर दें... ये कोई नहीं जानता... पर जिसके ऊपर कर दें.... उनका लोक परलोक सँवर जाता है। समय – समय पर ऐसी अनेक लीलाएँ रचकर परमात्मा की सत्ता का भान करवाते हैं– संत–महापुरुष!

गुरु महाराज जी के आश्रम (दरबार) पर हर समय सत्संग भजन भोजन की सेवा चलती रहती थी।

कोटि–कोटि नमन–वन्दन! धन–धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 12

निर्मानता – निष्कामता

सिन्ध प्रदेश के टण्डाआदम 'श्री अमरापुर स्थान' 'डिब्' पर सत्संग सभा लगी हुई थी। सभी संत – महात्मा मंचासीन होकर सुशोभित हो रहे थे। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का स्थान खाली रखा गया था। पहले सभी संत – महात्मा सत्संग कर रहे थे।

इसी बीच बिना कुछ बताये अपरिचित अचानक एक संत मंच पर आकर गुरु महाराज जी के आसन पर बैठ गये! सभी संत व सेवाधारी उस संत पर क्रोधित और नाराज होने लगे।

एक संत ने जाकर गुरु महाराज जी को बताया कि आपके स्थान (आसन) पर कोई एक संत आकर बैठ गये हैं।

स्वामी जी ने मंद – मन्द मुस्कराकर कहा– 'ये तो बहुत अच्छी बात है– कि हमारे आसन पर संत आकर बैठे हैं, इसमें गुस्सा करने वाली क्या बात है?' हमारा तो सौभाग्य है कि हमारे आसान पर संत आकर बैठे है। इससे पहले इस आसन पर न जाने कितने कीड़े – मकोड़े, मक्खी – मच्छर बैठे होंगे। उन पर तो आप गुस्सा नहीं हुए और न ही उन्हें कुछ कहते हो और एक संत के बैठने पर नाराज हो रहे हो। स्वामी जी के ऐसे मृदुल वचन सुनकर सभी नतमस्तक हो गये।

धन्य – धन्य है ऐसे निर्मानी – निष्काम संत– महापुरुष...

कोटि कोटि वन्दन...! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 13

बाबा जी का अखण्ड भण्डारा प्रसाद

जितना बाँटा बढ़ता जाये..... तेरे खेल समझ न आये
हमारी बुद्धि नही करती कुछ काम..... कि लीला तेरी तू ही जाने...

एक समय खण्डू गाँव में सायंकाल विशाल सत्संग सभा का आयोजन हुआ। सत्संग में अनुमान से अधिक श्रद्धालु – भक्तगण आये। सभी सत्संग – भजन में हो गये मंत्रमुग्ध... गुरु महाराज जी का भजन – सत्संग वैराग्य भरा था। महापुरुषों की अलौकिक मस्ती!

सत्संग समाप्ति के पश्चात् सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सभी से कह दिया– सभी भक्तजन भोजन – प्रसादी यहीं खाकर जाना – कोई भी बिना भोजन प्रसाद के न जाये। इतना सुनकर माता कृष्णादेवी ने स्वामी जी को बुलाकर कहा– अबा! यहाँ तो 30–40 लोगों का ही भोजन बनाया है परन्तु यहाँ तो चार पाँच सौ से अधिक लोग बैठे हैं – अब क्या किया जाय?घर में अनाज का एक भी दाना नहीं है ! अब– साईं बेटा! जैसा आप कहो वैसा करें।

विश्व व्यापक, विश्वम्भर प्रभु परमात्मा के अस्तित्व का परिचय देकर माताश्री को स्वामी जी ने साँत्वना दी और दृढ़विश्वास से कहा – 'जो परमात्मा सबका भरण – पोषण करता है, वह ही अपने आप सबको भोजन – प्रसादी अवश्य ही खिलायेगा।'

इतना कहकर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने जलपात्र लेकर 'सत्नाम साक्षी' ..... 'सत्नाम साक्षी'..... उच्चारण कर अंजलि भरके जल का छींटा भण्डारे पर छिड़ककर ऊपर से चादर ढक दी.....

भक्त मंघनराम व सेवाधारियों को कह दिया कि आप चादर मत हटाना.... और जितना चाहिये, अन्नपूर्णा माँ का भोजन परोसकर 'सत्नाम साक्षी' कहकर..... खिलाते जाना। प्रभु – परमात्मा सब भली करेंगे!

महापुरुषों के द्वारा कहा वचन सार्थक हुआ। ऐसा अदभुत दृश्य देखकर सभी आश्चर्य चकित हो गये। कहाँ तो 30–40 लोगों का भोजन और कैसे 400–500 लोग भोजन करके गए! भगवत् कृपा से सभी ने भरपेट भोजन – प्रसाद खाया ! यहाँ तक कि दीन – अनाथ, गरीबों को भी भरपेट भोजन खिलाया गया। कौन समझे ऐसे महापुरुषों की लीला को! कहते हैं कि तभी से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी बाबा का अखुट भण्डारा प्रसिद्ध है।...

कोटि – कोटि नमन.... धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 14

भाव के भूखे होते हैं– संत और भगवान

एक बार शाहभिट्ट नामक कस्बे में, जहाँ कुछ दिनों से सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित संगत को भगवन्नाम का अमृत पिला रहे थे। वहाँ के भक्त रूपचन्द बड़े संत सेवी थे। संतों की खूब सेवा किया करते थे और संतों से बड़ा प्रेम था।

उस दिन किसी कारणवश गुरु महाराज जी के सत्संग में नहीं आ सके, किन्तु अनेक प्रेमी – भक्तों की मन में था कि स्वामी जी स्वयं उनके घर पर चलें। स्वामी जी तो अंर्तयामी थे! सभी के मन की बात जान गए और कहा – 'चलो, अभी रूपचन्द के घर चलते हैं।' यह सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ, हम तो सोच ही रहे थे... और फिर मण्डली को साथ लेकर गुरु महाराज जी पहुँचे भक्त रूपचन्द के घर..... इक ही प्रेम प्रभु को भाया....

भाई रूपचन्द– वह तो गुरु महाराज जी के दर्शन करके बड़ा गद्गद् हुआ – बहुत पसन्न हुआ। अपना अहोभाग्य मानते हुए कहने लगा कि आज तो मैं धन्य – धन्य हो गया। मेरा घर पवित्र हो गया। घर बैठे ऐसे वैरागी – तत्त्ववेता संतों के दर्शन प्राप्त हुए हैं। मै तो अनेकानेक जन्म – जन्मांतर के पापों से मुक्त हो गया... जय हो प्रभु – तेरी जय हो...

इतना ही नही स्वामी जी ने भक्त रूपचन्द से कहा– सुना है – आप अपने हाथों की चक्की का आटा पीसते हो और उसी आटे की रोटियाँ बनाकर साधु – संतों व भक्तो को खिलाकर सेवा करते हो। अतः हमें भी रोटी खिलाओ – हमें भी बड़ी भूख लगी है। इतना सुनकर भक्त और भी अत्यधिक प्रसन्न हो गया... खुशी का ठिकाना न रहा। 'सबसे ऊँची प्रेम सगाई' भक्त रूपचन्द गुरु महाराज जी की ऐसी आज्ञा सुनकर तो निहाल हो गया। उस समय उसके घर में जैसी भी रोटी और साग (सब्जी) उपलब्ध था, वह स्वामी जी के सामने बड़े प्रेमभाव से परोस दिया और बेसुध होकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। स्वामी जी ने भी यह प्रसाद वैसे ही पाया जैसे भगवान श्री कृष्ण ने विदुर के घर जाकर केले के छिलके.... सुदामा के तन्दुल..... खाकर उसे कृतार्थ किया था... . आज वही भक्त और भगवान का दिव्य दर्शन सभी को हो रहा था...

ऐसी अलौकिक दिव्य लीला – दर्शन देखकर सभी भक्त बहुत प्रसन्न हुए। इसे कहते हैं – 'भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम!'

ऐसे महापुरुषों को कोटि कोटि नमन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 15

गुरु कृपा से कुएँ का खारा जल हुआ मीठा

एक समय सिन्ध प्रदेश में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित बडाणी के पास बख्शापुर कस्बे में पहुँचे। जहाँ लगी सत्संग की बसंत– बहार। गुरु महाराज जी की ओजस्वी वाणी..... जो सभी के दिल को छू जाती थी। साधारण जन तो क्या मूक प्राणी पशु – पक्षी भी सुनने के लिये हो जाते थे आतुर! साथ ही थे स्वामी जी ऋद्धि– सिद्धियों के मालिक!

महाराज श्री का नाम सुनकर दूसरे दिन शहर के पंच – सरपंच सभी मिलकर प्रातःकाल स्वामी जी के पास आये। स्वामी जी उस समय ध्यानस्थ थे। कुछ समय पश्चात् पंचों ने स्वामी जी से प्रार्थना की– 'हे प्रभु! दीनानाथ! हमारे गाँव में पीने के पानी की बहुत तकलीफ है। पानी भी बहुत कम है और एकमात्र कुँए का पानी..... वो भी खारा है। पानी न होने के कारण पूरा बख्शापुर कस्बा बड़ा परेशान रहता है। खारे पानी पीने से बीमारियाँ भी बहुत हो जाती हैं। पीने योग्य पानी भी प्राप्त नहीं हो रहा है। कृपा करें – प्रभु! आप तो जग के पालनहार है। आपकी कृपा हो जायेगी तो जल मीठा व पीने योग्य हो जायेगा और जल की कमी भी नहीं रहेगी।'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी उस समय भजनानंद की मौज में थे। स्वामी जी ने कहा– 'आप कल प्रातःकाल मीठे चावलों की देग तैयार करके गरीबों – अनाथो– कन्याओ में बाँटना। प्रभु – परमात्मा अवश्य कृपा करेंगे।' तपस्वी महापुरुषों के श्रीमुख से निकला वचन कभी निरर्थक नहीं हो सकता।

गुरु महाराज जी के वचनानुसार पंचों ने दूसरे दिन मीठे चावलों की देग बनाकर गरीब – अनाथों – कन्याओं में बाँटी और गाँव के सारे घरों में मिष्ठान का प्रसाद भी बाँटा गया।

तब श्री समर्थ सदगुरू टेऊँराम जी महाराज पंचों के साथ कुँए पर गये, वहाँ अपनी चिपी (कमण्डल) से अभिमंत्रित कर जल का छींटा..... सतनाम साक्षी.... कह कर कुँए में डाल दिया। फिर क्या था– देखते ही देखते कुँआ जल से लबालब भर गया! जल निकालकर पीया तो क्या देखते हैं... जल एकदम साफ – मीठा – स्वच्छ और पीने योग्य हो गया था। यह लीला देखकर सभी भक्त बड़े आश्चर्य चकित हो गए! फिर सभी लोग प्रसन्नचित हुए....

धन्य हो प्रभु– आपकी लीला अपरम्पार है.... इसे समझ पाना बड़ा मुश्किल है।

कोटि कोटि नमन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 16

महापुरुषों की अवधूती मस्ती

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वृक्ष की छाँव तले भजनानंद की मस्ती में श्री अमरापुर स्थान पर बैठे थे। अवधूती मस्ती का अनोखा आलम ! मुखमंडल पर दिव्य आभा –भक्ति तपस्या का तेज पुँज! कौन समझे उन संत – फकीर – मुर्शिदों की रमझ को – भजनानंद की अलौकिक मौज! उसी समय आया एक गवैया सूरश्याम केवलराम भक्त। भक्त के पास थी संगीत की अद्भुत कला, गाने–बजाने में था वह निपुण। उसने गुरु महाराज जी के सामने बहुत ही मधुर – मधुर भजन गाए! भक्ति–भाव के भजन सुनकर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस पर हुए बहुत प्रसन्न। उस समय स्वामी जी ने हृदय से प्रसन्न होकर गवैये केवलराम से कहा– 'भगत जी! आज हम तुम्हारे भजन – भाव से बहुत प्रसन्न हुए हैं– माँग लो – आज जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें अवश्य ही मिलेगा।' परन्तु कहते हैं न, जिसके भाग्य में कुछ भी न हो या फिर जिसे संत महापुरुषों से माँगना नहीं आता हो तो वह भाग्यहीन ही रह जाता है– उन्हें उस समय माँगना भी नही आता! क्या माँगे? उन भोले – भाले भक्तों को क्या मालूम कि उस समय तपस्वी महापुरुषों की स्थिति कैसी न अद्भुत होती है – उस क्षण जो भी माँगा जाये वह अवश्य ही मिल जाता है – परमात्मा भी उस वचन को टाल नहीं सकते! फिर समय निकल जाने पर कुछ भी हाथ नहीं आता....

बस! फिर क्या था उस समय भोले – भाले सूरश्याम भक्त केवलराम को स्वामी जी से माँगना भी नहीं आया – और उनसे एक तुच्छ वस्तु गर्म कोट माँग लिया। अगर थोड़ा सोच – समझ या विचार करके युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नेत्र ज्योति (आँखो की रोशनी) माँग लेता तो वह भी उसे अवश्य मिल जाती और उसका जीवन सँवर जाता। उन नेत्रों से भगवान व श्री गुरूदेव के दर्शन भी करता। पर उस कृपादृष्टि का लाभ हर कोई नहीं ले पाता। महापुरुषों की उस समय की स्थिति बड़ी अद्भुत एवं विलक्षण होती है।

थोड़ी देर के बाद वैराग्यमयी नजरों से निहारकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा– 'अरे भाई केवलराम! तुमने ये क्या तुच्छ वस्तु माँग ली, अरे! आज तुम्हें माँगना भी नहीं आया। आज अगर तुम नेत्र (आँखो की ज्योति) भी माँगते तो वह भी तुम्हें अवश्य प्राप्त हो जाती! किन्तु अब वह बन्दगी वाली स्थिति, समय, घड़ी हाथ से निकल गई – अर्थात बड़ा सुन्दर अवसर गँवा दिया।

शत शत नमन..... धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 17

अद्भुत रहस्यमयी लीला

एक समय युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ यात्रा करके किसी गाँव में पहुँचे। वहाँ दिन भर सत्संग – भजन की मौज हुई। सायंकाल दूसरे स्थान पर, जहाँ पर पहले ही सत्संग का भव्य कार्यक्रम रखा हुआ था। किन्तु जहाँ सत्संग का कार्यक्रम किया गया था, वहाँ सत्संग की मौज बहार व भक्तों की प्रेमा भक्ति के कारण बहुत देरी हो गई। उस छोटे से गाँव में वाहन बसें भी समय पर ही चलती थीं। समय पर जाने वाली बस के बाद कोई बस अथवा दूसरा कोई साधन भी नहीं होता था। वहाँ देर हो जाने के कारण सायं 3 बजे जाने वाली अंतिम बस जा चुकी थी। अब कोई दूसरा साधन भी नहीं था। सभी संत व भक्तजन बस स्टेण्ड पर खड़े रहे। उस समय सद्गुरु महाराज जी की मण्डली में 40–50 संत – भक्त चल रहे थे। सभी परेशान होने लगे – अब क्या क्या किया जाये? कैसे पहुचेंगे दूसरे गाँव? दूसरा कोई साधन भी नहीं था और समय भी तीव्र गति से भागा जा रहा था। इसी बीच सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की तो अपनी फकीरी वाली मौज, न कोई चिंता न कोई परवाह – अपनी अवधूती मस्ती में मस्त! सभी ने की – गुरु महाराज जी से प्रार्थना...

हे – दीनदयाल – अन्तर्यामी प्रभु! अब आप ही कृपा करो, जिससे समय से पहुँचकर सत्संग आयोजन को पूर्ण कर सकें। सद्गुरु महाराज जी ने कहा– 'आप चिंता मत करो । सब बैठकर भगवान का भजन– कीर्तन करो। सत्नाम साक्षी... धुनि लगाओ।'

स्वामी जी की आज्ञा अनुसार सभी संत और भक्तजन बड़े ही भावविभोर होकर 'सतनाम साक्षी सर्व आधार – जो सुमरे सो उतरे पार' ..... धुनि – संकीर्तन करने लगे। बस फिर क्या था। लीला पुरुषोत्तम ने दिखाई अपनी रहस्यमयी लीला! थोड़ी ही देर में एक बस आकर खड़ी हो गई। यह देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये। गाँव से अंतिम बस 3 बजे चली गई थी। उसके बाद दूसरी कोई बस जाती ही नहीं थी। यह बस कहाँ से आ गई। गाँव वाले भी बड़े हैरान! ऐसा पहले कभी भी नहीं हुआ। कौन लेकर आया यह बस? कौन था चलाने वाला? कुछ अता – पता नहीं । उसकी लीला वे ही जानें। उस फकीर सद्गुरु टेऊँराम बाबा की लीला को कौन समझे। सभी प्रसन्नचित होकर कहने लगे– हे गुरुदेव! आपको समझ पाना बड़ा मुश्किल है – प्रभु आप धन्य हैं!

ऐसी अदभुत ऋद्धि – सिद्धियों के मालिक थे – सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! आज तक कोई भी नही समझ पाया उनकी इस अद्भुत रहस्यमयी लीला को....

शत– शत नमन ..... धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 18

मान–अपमान से परे– श्री गुरुदेव जी

समय – समय पर सत्पुरुषों की आलोचना भी होती रहती है, किन्तु उनकी सत्याचरण के सामने सभी को झुकना पड़ता है। ऐसे ही भगवत् प्रचार– सत्उपदेश देते हुए सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज शिकारपुर पहुँचे। वहाँ पन्द्रह दिनों तक धर्म – कर्म – भक्ति – प्रेम आदि का सत् उपदेशामृत जिज्ञासुओं को सुनाया। वहाँ की जनता भी बड़े स्नेहिल भाव से प्रतिदिन कथा – सत्संग श्रवण करती रही। लोगों को आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होने लगी। भक्तों की भीड़ दिनों – दिन बढ़ने लगी। कई दिनों तक अद्भुत भक्तिमय माहौल बन गया। ऐसा लग रहा था मानों ईश्वरीय शक्ति की प्रचण्ड आभा प्रकाशित हो रही हो – किसी को कोई सुध – बुध नहीं.... सभी भक्ति के रंग में रंगे.... न समय का, न दिवस का भान.... अलौकिक मस्ती में मस्त.... सभी भक्तों का स्वामी टेऊँराम जी के प्रति अथाह प्रेम स्नेह जागृत हुआ। सभी करने लगे स्वामी जी की महिमा का गुणगान। यश – कीर्ति फैलने लगी।

ऐसे ही एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत – मण्डली सहित भजन – सत्संग कर रहे थे, उस समय एक ईर्ष्यालु व्यक्ति ने कहा – इन साधु – संतों को क्या पता राग – रागनियों में भजन कैसे गाये जाते हैं, किस प्रकार स्वर – ताल मिलाया जाता है, ये तो बस इकतारे और घुंघरू मण्डित डँडे ही बजा सकते हैं। इन्हें सुर गाजे – बाजे का कोई ज्ञान नहीं। ऐसे अपशब्द बोलकर स्वामी जी व संत मण्डली को नीचा दिखाने का प्रयास कर रहा था। जिससे कि महापुरुष स्वामी जी की यश – कीर्ति न हो पर उस नादान – मूढ़ अज्ञानी को क्या मालूम कि ये महापुरुष कोई साधारण व्यक्ति या संत नहीं है, ये तो साक्षात् ईश्वरीय अवतार हैं। लीला मात्र इस धरा धाम पर आये हैं। अनेक रहस्यमयी लीलाएँ रच कर न जाने कितनों को सत् मार्ग पर लगाया है। आखिरकार ये शब्द गुरु महाराज जी के कानों में भी पड़े। मान – अपमान से परे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कुछ भी न कहकर मंद – मंद मुस्कुराने लगे। उसी समय गुरुदेव भगवान ने स्वरचित भजन सोलह अलग – अलग राग – रागनियों एवं स्वर – तालों में गाकर सुनाया.....

मुरली मोहन जी, सत्गुर सुणाई... बदन जे ब्रज में, वेही मूं वज़ाई ....

ऐसी अद्भुत ओजस्वी वाणी में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अलग – अलग राग – रागनियों में जब यह भजन गाया तो सभी अचम्भित हो गये। भाव – विभोर होकर सभी स्वामी जी की अमृतवाणी श्रवण करने लगे। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों संगीत के आचार्य भगवान शिव जी अपने मधुर स्वर सुना रहे हों। ऐसा अद्भुत अचरजमय करिश्मा देखकर वह व्यक्ति पश्चाताप करता हुआ स्वामी जी से क्षमा याचना माँगने लगा।

'हे प्रभु! मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है – मुझे माफ कर दो – मै आपको पहचान न सका। श्री चरणों में गिरकर बारम्बार क्षमा की याचना करने लगा। महापुरुष तो कृपा निधान होते हैं। क्षमादान देते हुए बोले – 'वत्स! आज के बाद किसी की भी निंदा नही करना।'

शत शत नमन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 19

सिद्धों के मेले में पशु बलि रुकवाना

एक समय की बात हैं– जब युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज 'भिट्ट शाह' शहर में ठहरे हुए थे। उन दिनों में ठोढ़नि नामक गाँव में सिद्धों का बड़ा भारी मेला लगता था। एक भक्त ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को बताया कि इस मेले में बहुत से पशुओं की बलि दी जाती है।

तब गुरु महाराज जी 30–35 प्रेमियों को साथ लेकर उस मेले में पहुँचे – जहाँ सत्पुरुष पहले से ही भजन– सत्संग कर रहे थे। वहाँ के महंत भक्त पुरसूराम जी के निवेदन पर स्वामी जी ने भी सत्संग – प्रवचन किया कि संसार में किसी भी जीव को पाप कर्म नहीं करना चाहिए – पाप कर्म करने से यह जीव चौरासी के चक्कर में जाकर अनन्त दुःखों को प्राप्त करता है। इसलिए जीवन में पाप कर्म कभी नहीं करना चाहिए। इस धार्मिक मेले में हर महीने पशुओं की बलि दी जाती है, ये अच्छी बात नहीं है कि यहाँ निर्दोष मूक प्राणियो की हत्या की जाये। उसके पाप का भागीदार कौन होगा?देवी – देवताओं को कभी भी माँस – शराब आदि का भोग नहीं लगाना चाहिए। यह तो सात्विक सत्पुरुषों का पवित्र स्थान व धार्मिक मेला है। उनको छप्पन भोग व षट्रस भोग लगाना चाहिए न कि तामसिक भोजन का..... धर्मशास्त्र व पुराणों में ऐसे भोजन के लिए स्पष्ट मना किया है। घर के पवित्र उत्सव, शादी, यज्ञोपवीत, नामकारण संस्कार आदि में भी ऐसे भोजन का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। जैसा कि शास्त्रों में बतलाया गया है–– ये सब पाप के भागीदार होते हैं–

1. उपदेश करने वाला (खाने की सलाह देने वाला), 2. समर्थन करने वाला, 3. लाकर देने वाला, 4. काटने वाला, 5. पकाने वाला, 6. खाने वाला....

भगवान कहते हैं **'जीव दया तो मम दया'** जो जीवों पर दया करते हैं – उसी पर भगवान की दया – कृपा होती है.....

स्वामी जी ने अनेक दृष्टान्त व प्रमाण देकर समझाया– जिसे सुनकर वहाँ के महन्त श्री ने भी प्रतिज्ञा की कि अब हम कभी भी ऐसे पवित्र स्थान पर माँस का उपयोग नहीं करेंगे। आज से यहाँ सिद्धों के उत्सव पर दाल व मीठे चावल का प्रसाद बॉटेंगे। उपस्थित सभी प्रेमियों ने भी प्रतिज्ञा की– कि हम आज के बाद माँस – शराब आदि का उपयोग नहीं करेंगे – देवी – देवताओं पर बलि भी नहीं चढ़ाएँगे और न ही हिंसा करेंगे – ना होने देंगे। इतना सुनकर सभी प्रेमी आपस में कहने लगे कि इस वर्ष मेले में आना सफल हुआ...।

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–20

आडम्बर से दूर एवं निर्मानता

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टण्डाआदम – श्री अमरापुर स्थान पर ही निवास करते थे। वहाँ अनेक संत – महात्मा और सेवाधारी श्री गुरु महाराज जी की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। स्वामी जी भी अपने भजनानंद की मौज में सदैव साधनारत रहते थे। पूर्ण वैराग्यता....

एक दिन दोपहर के समय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को कहीं जाना था। ज्येष्ठ का महीना.... धूप भी अत्यंत तेज.... तीव्र गर्मी.... स्वामी जी तो अपने आसन से बिना कुछ बोले – उठकर चल दिये। संत – महापुरुष तपस्वियों को क्या सर्दी.... क्या गर्मी.... बिना किसी को कुछ बोले अकेले ही उस तपती गर्मी में निकल पड़े। फकीरों की अलौकिक मौज!

उसी वक्त किसी प्रेमी – भक्त की नज़र स्वामी जी की ओर गयी तो उसने देखा – इतनी भीषण गर्मी में स्वामी जी अकेले ही कहीं जा रहे हैं – वह भागता हुआ पीछे से छाता लेकर आया और स्वामी जी के ऊपर छाता ढकने लगा.....

श्री गुरु महाराज जी ने उससे कहा – 'भाई! हमारे ऊपर छाता क्यों लगाया है?और पीछे क्यों आये हो?' प्रेमी हाथ जोड़कर कहने लगा– 'हे प्रभु! मैंने आपको देखा कि आप अकेले ही कहीं जा रहे हैं। सूर्य भगवान की तपन से गर्मी भी बहुत है। सो मैंने विचार किया। तेज धूप के कारण मैं आपकी सेवा में यह छाता लेकर आया हूँ। क्षमा करना.....'

तब स्वामी जी ने बड़े ही स्नेह भाव से समझाकर उससे कहा – 'भाई, आपकी भावना श्रद्धा – अच्छी है। यह आपकी गुरू निष्ठा है, परंतु हम छाता नहीं लगवायेंगे; क्योंकि आज अगर हम एक छाता लगवायेंगे तो हमारे पीछे वाले दस – दस छाते लगवायेंगे..... ये परम्परा बन जायेगी और आने वाली पीढ़ी हमारा अनुसरण करेगी।'

देखो ! कैसी थी महापुरुषों की निच्छल सादगी व फकीरी! किसी भी प्रकार का कोई आडम्बर नहीं। मान – यश – कीर्ति से कोसों दूर! दूर की सोच, सहजता – सरलता और आने वाली पीढ़ी को एक प्रेरणादायक सन्देश! अर्थात् कोई आडम्बर नही करना है.....

कोटि कोट वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–21

नन्हें बालक का अटल विश्वास

श्री अमरापुर दरबार 'डिब' पर एक दम्पति अपने 7–8 साल के बालक साँवल के साथ पहुँचे। युगपुरुष सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आज्ञानुसार 2–3 दिन आश्रम पर रहे। छोटे बालक साँवल का स्वामी जी से इतना स्नेह – प्रेम हो गया कि वह उनके साथ उठता – बैठता, खाता – पीता.....

2–3 दिन के बाद माता–पिता ने साँवल को कहा कि आज शाम को हम अपने गाँव चलेंगे। तब वह बालक रोने लगा और कहने लगा कि मैं यहीं आश्रम पर स्वामी जी के साथ ही रहूँगा। माँ – बाप के बहुत कहने पर भी नहीं समझा। आखिर साँवल के माता – पिता ने श्री गुरु महाराज जी को कहा– कि आप ही इसे समझायें, जिससे यह घर चले..... जिद नहीं करे....

स्वामी जी ने नन्हे साँवल को कहा– 'बेटा! तुम जब भी याद करोगे..... हम तुम्हारे पास आ जायेंगे..... अभी तुम अपने माता – पिता के साथ घर जाओ। चैत्र मेले पर अवश्य आना.....' स्वामी जी की आज्ञा शिरोधार्य कर वह दम्पति विदाई लेकर अपने गाँव लौट गये।

समय अपनी रफ़्तार से बीतने लगा। चैत्र मास भी आ गया। साँवल के माता – पिता मेले में आने की तैयारी कर रहे थे कि मेले से एक दिन पूर्व साँवल की तबियत बहुत खराब हो गई, तब साँवल के पिता ने कहा – तुम्हें बहुत बुखार है, अब तुम कैसे चलोगे – तुम यहीं रुको। मैं अकेला ही चैत्र मेले में होके आता हूँ।

तब नन्हें साँवल ने कहा – स्वामी जी को बोलना कि साँवल आपको बहुत याद करता है। आशीर्वाद करें मैं जल्दी ठीक हो जाऊँ। मेरे लिए गुरु बाबा जी से आशीर्वाद और लड्डू का प्रसाद लेकर आना.....

साँवल के पिता मेले पर पहुँचे। श्री गुरु महाराज जी से मिले और दंडवत प्रणाम किया। पाँच दिन तक सेवा – सत्संग – दर्शन सुमरण की त्रिवेणी का आनंद उठाया और अत्यधिक भीड़ होने के कारण बिना मिले ही मेला समापन के बाद पिता अपने घर को लौट आये। घर पर साँवल को देखकर उसके पिता की आँखो से अश्रु बहने लगे और पुत्र से बोले – बेटा! मैं तुम्हारा कार्य नहीं कर सका... स्वामी जी से तुम्हारे लिए मैं लड्डू नहीं माँग सका; क्योंकि मेले में बहुत भीड़ थी, जिससे स्वामी जी से मिल भी न सका....

तब नन्हा साँवल हँसने लगा और अपने पिता से बोला कि गुरु बाबा श्री सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज तो मेरे पास आये थे और लड्डू प्रसाद भी मुझे दे गये हैं। साँवल कमरे में गया और वहाँ से स्वामी द्वारा दिये हुए लड्डू लाकर अपने पिता को भी खिलाये। यह सब देखकर उसके पिता आश्चर्य में पड़ गये। ये लड्डू.... अरे, ये तो वही लड्डू हैं – जो वहाँ भण्डारे में खिलाये गये थे। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ये लड्डू यहाँ कैसे आ गये?'बाबा टेऊँराम' आपकी लीला अपरम्पार है। इसे समझ पाना बड़ा कठिन है। इसे कहते है – अटल दृढ़ विश्वास! सच्ची लगन और श्रद्धा – भक्ति!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–22

संत – महात्माओं का स्वावलम्बी जीवन

मजदूरी करके लिया, इकतारे का साज।

भूल न किससे माँगिये, कैसा भी हो काज।।

महापुरुषों का जीवन सरल व सादगी पूर्ण होता है। उनका एक ही लक्ष्य होता है परमात्मा की बन्दगी करना और भगवान को प्राप्त करना वे कभी भी किसी वस्तु की आवश्यकता होने पर भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते। जैसा कि संतो की सीख है **'माँगन मरण समान है – मत माँगो कोई भीख'**।

ऐसे ही एक समय युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को भगवद् – भजन हेतु 'यकतारे' वाद्ययंत्र की आवश्यकता पड़ी। पैसों का अभाव था। संतों का धन – दौलत से क्या काम..... फक्कड़ संत महात्मा..... 'माँगन मरन समान है' अर्थात् किसी के सामने हाथ फैलाना अच्छी बात नहीं। ये संत– महात्माओं का काम नहीं। किसी के आगे भूल कर भी कभी हाथ नही फैलाना चाहिये.....

इसी बीच किसी स्थान पर मकान बन रहा था, वहाँ स्वामी जी ने चार– पाँच दिन मेहनत– मजदूरी करके दस रूपये प्राप्त किए। उसी पारिश्रमिक धन से 'यकतारा' वाद्ययंत्र खरीदा। इकतारे को लेकर खूब भगवत् – भजन किया। सनातन धर्म का प्रचार – प्रसार किया। जगह – जगह परमात्मा की अलख जगाई..... इसी प्रकार पूरे जीवन भर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कभी भी किसी के सामने हाथ न फैलाकर 'स्वावलम्बन व आदर्श जीवन' का परिचय दिया। हमें भी कभी किसी के आगे हाथ नही फैलाना चाहिये।

संत– महापुरुष तो कर्मयोगी और कर्त्तव्य – परायण होते है.....

ऐसे दुर्लभ योगी महापुरुषों को कोटि– कोटि नमन!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–23

श्री गुरुदेव की असीम कृपा

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पवित्र 'श्री अमरापुर दरबार' (डिब) पर अनेक साधु–संत – सेवाधारी खूब तन – मन से सेवा किया करते थे। सभी के मन में यही भाव होता था कि स्वामी जी हमारी सेवा से सदैव प्रसन्नचित रहें और हमें आशीर्वाद दें। निश्छल भाव, निष्कामता। कोई सांसारिक पदार्थों की इच्छा नहीं – पवित्र निर्मल भाव.....

टण्डा आदम श्री अमरापुर दरबार पर 'हरीराम' नाम का एक भंडारी संतो की खूब सेवा किया करता था। उसका स्वभाव भी बड़ा अच्छा व मृदुल था। सदैव प्रसन्न मन से भोजन बनाने की सेवा करता था। पवित्र मन से भण्डारा बनाने से भोजन – प्रसाद भी बहुत अच्छा और स्वादिष्ट बनता था। सारे संत – महात्मा और गुरु महाराज जी भी उनकी सेवा से प्रसन्नचित रहते थे। उसकी निष्कामता, निर्मलता, पवित्रता और मृदुलता ने उसे सभी संत – सेवाधारियों व श्री गुरु महाराज जी का प्रिय बना दिया था।

एक समय हरीराम भंडारी हाथ जोड़कर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से कहता है– 'हे प्रभु! दीनदयालु! आप कृपा करके इस दास को सदैव अपनी सेवा में ही रखना..... अपने से कभी भी अलग मत करना..... हमेशा अपने साथ व अपने पास रखना..... मैं सदैव आपके श्री चरणों की सेवा करना चाहता हूँ।'

श्री सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस समय भजनानन्द की मौज में बैठे थे। अवधूती मस्ती! स्वामी जी ने कहा – 'भाई! आप किसी बात की भी चिंता मत करो – घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। आपने हमारी दिल बहुत खुश की है, हम तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हैं..... यह लोक तो क्या परलोक में भी तुम्हें अपने साथ ही रखेंगे.... तुम चिंता मत करो।' श्री गुरुदेव के वचन सुनकर 'हरिराम भंडारी' बड़ा प्रसन्न हुआ। इसे कहते हैं – 'श्री गुरुदेव की अनन्य कृपा'! ऐसा हर कोई नही कह सकता, जो पूर्ण ब्रह्मज्ञानी होगा वह ही दावे के साथ कर सकता है।

संत – महापुरुष जिसके ऊपर कृपा कर दें, तो उसका जीवन ही सँवर जाता है। बस! हम उन महापुरुषों को समझने का प्रयास करें। ऐसे कामिल महापुरुष इस लोक में तो क्या, परलोक में भी सहायक और हमराही बनते हैं। वही हमें इस संसार सागर से पार कर सकते हैं। ये सब होता है – निष्काम सेवा का फल....! हम भी गुरु दरबार व संतो की खूब तन मन से निष्काम सेवा करें।

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–24

संत परम हितकारी

टण्डाआदम सिन्ध में स्थित युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की 'श्री अमरापुर दरबार' जहाँ था चहुँ ओर विशाल बाग़ – बग़ीचा। सभी संत – सेवादारियों को गुरू आश्रम की अपनी– अपनी सेवा। कोई कोठार, कोई भण्डारा, कोई संत सेवा, कोई खेती – बाड़ी तो कोई बाग़ – बग़ीचे की सार – संभार में सेवारत रहते थे।

ऐसे ही सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आज्ञा से संत अर्जुनदेव जी बाग़ – बग़ीचे की सेवा किया करते थे। बग़ीचे में अमरूद, सेब, केला, अनार, अंगूर, आम आदि फल – फूल लगे हुए थे। संत जी दिन – रात लगन के साथ बग़ीचे की देखभाल किया करते थे।

एक दिन संध्याकाल के समय एक गरीब उस बग़ीचे में आकर आम की गठरी बाँधकर ले जाने लगा। तब संत अर्जुनदेव की दृष्टि उस गरीब पर पड़ी। उसे पकड़ लिया और कहा, चोरी करते हो? थोड़ा गुस्सा भी किया। बिचारा गरीब डर गया और क्षमा माँगने लगा। थोड़ी देर बाद परम उदारी भक्त वत्सल सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भ्रमण करते हुए वहाँ आ पहुँचे। सारा वृत्तान्त जानकर गरीब के सिर पर स्नेह – दुलार का हाथ घुमाया – दया भाव रखकर उससे कहा– वत्स! कोई बात नहीं, तुम भी भगवान की सन्तान हो। ये फल – फूल सभी वस्तु परमात्मा की है। इन पर सबका अधिकार है। इसे हम सबको मिल– बाँटकर खाना चाहिये।

स्वामी जी ने संत अर्जुनदेव जी से कहा, इन्हें आम दे दो। आम किसके लिये हैं? इसे कौन खायेगा? इसे आवश्यकता थी, तो इसने भगवान की वस्तु समझकर फल ले लिये.... इसमें क्रोध करने की कोई आवश्यकता नहीं.... इस बिचारे की भी कोई मजबूरी रही होगी। आज कोई काम नहीं मिला होगा – अर्थात् जितना माँगे इन्हें फल दे दो....

संत – महापुरुष तो सर्वगुण सम्पन्न, परम उदारी और अन्तर्यामी होते हैं। स्वामी जी ने बड़े ही स्नेहयुक्त वचन बोलकर उस गरीब से कहा – आपको जितने फल चाहिए.... आप ले जाओ...! किसी प्रकार की कोई चिंता न करो। स्वामी जी उदारता व दयालुता को देखकर वह गरीब बड़ा प्रसन्न हुआ और श्री चरणों में प्रणाम करके चला गया।

श्री गुरु महाराज जी की ऐसी दया कृपा को देखकर सभी संत– सेवाधारी बड़े प्रसन्नचित हुए।

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–25

कुँआ लबालब भर गया.....

'भक्ति में होती है अद्भुत शक्ति!' सत्पुरुष अपनी शक्ति उजागर नहीं करते। किन्तु उनके श्रीमुख से निकला वाक्य कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। समय काल परिस्थिति के अनुसार भगवान संतों की वाणी को सार्थक करते हैं। जिससे लोगों की आस्था श्रद्धा बनी रहे।

एक समय श्री अमरापुर दरबार 'डिब' चैत्र मेले के अवसर पर भण्डारे भोजन के लिए पानी – जल की आवश्यकता पड़ी। कुँए में पानी सूख गया था..... अब बिना जल के भोजन कैसे बने? सभी सेवाधारी और भंडारी चिंता करने लगे। अब क्या किया जाये? मेले में श्रद्धालुओं की भीड़ भी बहुत आयी हुई थी।

तब कुछ संत – सेवाधारियों ने युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को बताया कि कुँए में पानी नहीं है। बिना जल के भोजन नहीं बन पायेगा। अब आप ही कृपा करो – प्रभु जी!

सर्व समर्थ स्वामी टेऊँराम बाबा जी ने कहा – चलो हमारे साथ... हम जल देवता से कह देते हैं.. तब स्वामी जी प्रेमियों के साथ कुँए के पास आये और.. 'सत्नाम साक्षी'–2 ..... कहकर अपनी चिप्पी (कमण्डल) में से 2–3 बार जल का छींटा मारा। फिर क्या था.....

महापुरुषों के कथनानुसार थोड़ी ही देर में पानी में गड़गड़ की आवाज आयी... और देखते ही देखते कुँआ पानी से लबालब भर गया! ये देखकर सभी प्रसन्नचित्त हुए।

श्री गुरु महाराज जी की यह लीला देखकर सभी संत – महात्मा व भक्त बड़े आश्चर्यचकित हो गए .... और सबके मुख से निकल पड़ा – बाबा जी, आपकी लीला अपरम्पार है!

इस अलौकिक लीला से स्वामी जी की यश – कीर्ति और बढ़ गई.... लोगों को ईश्वरीय शक्ति का आभास हो गया। ऐसे महायोगी के श्री चरणों में शत – शत नमन!

कहीं– कहीं पर संत – महापुरुष भगवान की शक्ति को उजागर करने के लिए अनेक प्रकार की अलौकिक लीलाएँ दिखाकर प्रभु सत्ता का भान करवाते हैं। जिससे ईश्वरीय शक्ति पर लोगों की आस्था बनी रहे।

कूप नीर जब चुक गया, भक्तनि करी पुकार। सद्गुरु छींटा मार तब , कीनी जय जयकार।।

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–26

तप–साधना–भक्ति के प्रभाव से बना तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

जिस बालू रेत से शहर वालों को बड़ा खतरा रहता था। आये दिन आंधी – तूफान से पूरा शहर मिट्टी – मिट्टी हो जाता था। जगह – जगह रेत के टीले बन जाते थे। सभी को बड़ा नुक्सान होता था। बड़े से बड़े सरकारी कर्मचारी अधिकारी भी इसका निराकरण नहीं कर पा रहे थे। सभी ने बहुत प्रयास किये, परन्तु सब व्यर्थ। किन्तु तप – तपस्या – साधना – भक्ति के बल पर महायोगी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संत – महात्माओं के साथ मिलकर उस बालू रेत को इस प्रकार बंद कर दिया कि उसका एक तोला भर भी उड़कर शहर में नहीं आ सकता था। शहर वालों पर बहुत बड़ा उपकार हो गया। वैसे भी साधु – संत – महात्मा तो परउपकारी होते ही हैं – जगत् कल्याण के लिए ही अवतरित होते है। साधु – संतों ने तो बहुत कड़ा परिश्रम कर जंगल में मंगल कर दिया। जो कार्य असम्भव था। वह भजन – साधना के प्रभाव से युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सम्भव कर दिया।

इस आश्चर्यजनक शक्ति को देखकर श्री गुरु महाराज जी के समक्ष जिलाधीश सहित बड़े – बड़े अधिकारी, मजिस्ट्रेट, पटवारी, सरपंच व पूरे शहर की जनता नत् मस्तक हो गये।

ऐसा अद्भुत करिश्मा तो ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है! समतल जमीन से लगभग 30–35 फुट ऊपर श्री गुरुदेव जी की तप – साधना स्थली – वही रेत का टीला – 'श्री अमरापुर दरबार (डिब)' के नाम से सुविख्यात हुआ। आज भी वह पवित्र तीर्थ स्थल टण्डाआदम (सिन्ध) में बना हुआ है। हजारों भक्त प्रतिदिन दर्शन करते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज 'डिब वाले साईं' के नाम से प्रसिद्ध हुए। तभी किसी कवि ने एक पंक्ति में लिखा–– 'उड़ती रेत को दिया आपने थाम – कि लीला तेरी तू ही जाने'.....

ऐसे युगपुरुष तपस्वी महापुरुषों को शत – शत नमन....

कोटि कोटि वन्दन! धन धन बाबा टेऊँराम!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 27

अनन्त शक्ति के मालिक श्री गुरु महाराज जी

सर्वगुण सम्पन्न, भक्ति – शक्ति के आधार स्तम्भ, सच्चिदानन्द स्वरूप, निर्गुण निराकार, सिन्ध प्रदेश के युगपुरुष महायोगी भगवद् स्वरूप सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! जिनकी यश–कीर्ति सूर्य के सम चहुँ ओर प्रकाशित है – ऐसे परम योगीश्वर की महिमा का गुणगान करना सूर्य को दीप दिखाना जैसा ही है.....

एक समय स्वामी जी सिन्ध से देश के तीर्थस्थलों की यात्रा पर निकले। कुछ संत महात्मा एवं भक्तगण उनके साथ थे। पूरे हिमालय, उत्तराखण्ड, चारों धाम, उत्तरकाशी, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि सभी यात्राओं पर पैदल भ्रमण करते हुए तीर्थाटन कर रहे थे। सर्वशक्ति के आधार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित निर्भयता के साथ एवं भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी को सहन कर तीर्थ दर्शन कर रहे थे। तभी उसी जंगली पहाड़ी क्षेत्र में किसी भक्त को बड़ी भूख–प्यास लगी। भोजन व दूध की इच्छा हुई – संतों व भक्तों ने उसे बहुत समझाया। यहाँ जंगल में दूध व भोजन कहाँ से मिलेगा? इस घोर जंगल में अन्य व्यक्ति तो क्या..... पशु – पक्षी तक भी नजर नहीं आ रहे.....

श्री गुरु महाराज जी अपनी मस्ती में मस्त, प्रभु – भक्ति में लीन – ब्रह्मचिन्तन में स्थित! क्या भूख..... क्या प्यास.....

भूख–प्यास से व्याकुल भक्त – स्वामी जी से मन ही मन पुकार कर रहा था... सर्वशक्ति के भण्डार....., अन्तर्यामी स्वामी जी ने उस भक्त की पुकार सुन ली। स्वामी जी ने दो मिनट ध्यान चिंतन किया। बस! फिर क्या था, अद्भुत करिश्मा! उसी क्षण एक सज्जन आया और भोजन व दूध की भरी गागर रखकर चला गया। यह आश्चर्यजनक अद्भुत शक्ति देखकर सभी संत व भक्त चकित हो गये! अरे! इस जंगल में दूध की गागर? कैसे आयी! कहाँ से आयी! कौन समझे ऐसे दिव्य महापुरुष की अद्भुत लीला को – कौन लाया उस दूध को? आज तक कोई नहीं समझ पाया।

ऐसे सर्व शक्ति के भण्डार को हमारा शत शत नमन..... बारम्बार वन्दन....

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 28

पटवारी वाहिद बख्श बना स्वामी जी का शिष्य

परम संत सेवी वाहिद बख्श। ये व्यक्ति पटवारी होकर हैदराबाद से खण्डू आया था। इसका युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से सम्पर्क तब हुआ, जब कुछ ईर्ष्यालुओं ने सत्संग के चबूतरे को तोड़ दिया था। सत्संगियों ने सारी हकीकत बताई। साथ ही उन्हें वहाँ चलने की प्रार्थना की, तो वे स्वयं चलकर आए, वहाँ चबूतरे वाले स्थान को पूरा देखा। वहाँ किसी को कोई परेशानी नहीं हो रही थी और कहा, 'ये तो अच्छी बात है कि संत लोग यहाँ सत्संग कर रहे हैं।' फिर सभी प्रेमी उन्हें श्री गुरुदेव के पास ले आये.....

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के मनमोहक मंगलमय वैराग्यमयी तेजपुँज दर्शन कर वह मुसलमान पटवारी वाहिद बख्श मंत्रमुग्ध–से हो गए। एक ही झलक में वाहिद बख्श हमेशा के लिए स्वामी जी के श्रीचरणों का चाकर बन गया..... 'आप तो साक्षात् रब – अल्लाह की मूरत लग रहे हैं.... ऐसा लग रहा है जैसे मुझे ईश्वर का साक्षात् दर्शन हो रहा हो.....' बड़े भक्ति भाव से पटवारी जी ने स्वामी जी को सादर दण्डवत् प्रणाम करते हुए यह सब कहा।

फिर क्या था तो इन्होंने ही सत्संग का पूरा चबूतरा स्वयं की देख – रेख में स्वयं के ही खर्चे से बनवाकर दिया और स्वामी जी के श्रीचरणों में विनय करके कहने लगा – 'हे दरवेश फकीर साईं! इस गुलाम के लिए और कोई ख़िजमत (सेवा) हो तो यह गुलाम (सेवक) सदैव आपकी सेवा के लिए हाजिर रहेगा।' स्वामी जी वाहिद बख्श का निष्कपट प्रेम व श्रद्धा देखकर बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन जब वाहिद बख्श स्वामी जी के सत्संग में आया, तो उन्हें ऐसा भगवत भक्ति का रसानन्द आया कि एक मटका लेकर बजाने लगा। इतना प्रेम से बजाया कि सारे प्रेमीगण भी झूमने व नाचने लगे। वाहिद बख्श स्वामी जी के श्री चरणों में निवेदन कर कहने लगा – 'हे फकीर साईं! आज आपके भजन – कीर्तन में बड़ा आनंद आया और मैं तो बड़ा सौभाग्यशाली हूँ जो मेरी किस्मत मुझे यहाँ खण्डू में पटवारी बनाकर ले लायी है।' श्री गुरु महाराज जी भी मुस्कराकर बोले– 'भाई! बहुत अच्छा! सत्संग – दर्शन भी किसी – किसी नसीब वालों को ही मिलता है। तुम्हारा भाग्य अच्छा है। अब आप रोज भजन – सत्संग में आकर मटके बजाने की सेवा किया करें.... कभी – कभी दरवेशों के कलाम (भजन) भी सुनाया करो...

श्री गुरु महाराज जी की आज्ञानुसार अब वाहिद बख्श प्रतिदिन सत्संग में आता और मटका बजाकर भजन सुनाया करता था। जीवन चरितामृत में आता है कि वाहिद बख्श जीवनपर्यन्त स्वामी जी की सेवा में रहा और नाम दान की दीक्षा लेकर स्वामी जी का शिष्य बना और पूरा जीवन सत्संग – दर्शन कर खूब आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया....

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 29

खिये भगत के चोरी की आदत को छुड़वाना

बात उस समय की है – जब युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज खण्डू में विराजमान थे। उस समय श्री गुरु महाराज जी की सेवा में हँसराज और खिया भगत रहते थे। खण्डू के बाद ये दोनों श्री अमरापुर दरबार डिब – टण्डेआदम में भी सेवारत रहे। किन्तु कुछ संस्कारवश खिये भगत में चोरी की बुरी आदत पड़ गई थी। वह संत – महात्माओं के कपड़े चोरी करके अपने घर भेज देता था। उसके परिवार वाले मना भी करते थे पर वह मानता ही नहीं था। इस बुरी आदत के कारण सभी संत खियाराम से रुष्ट रहते थे। प्रतिदिन चोरी होने लगी – इससे संत नाराज होकर स्वामी जी के पास शिकायत लेकर आये। ये खिया रोज हमारे कपड़े चुराकर घर भेज देता है। अतः आप इसे यहाँ से निकाल दें। हम इससे बहुत परेशान हो गए हैं। स्वामी जी ने संतों की शिकायत व नाराजगी को शान्तचित होकर सुना लेकिन बोले कुछ नहीं!

एक समय खियाराम की बेटी चोरी के सारे कपड़ों की गठरी बाँधकर स्वामी जी के पास ले आयी। यह देखकर संतों ने नाराजगी जताते हुए स्वामी जी से कहा, कि देखा आपने! ये सभी चोरी के कपड़े हमारे हैं। अब आप इसे आश्रम से निकाल दें.... इसने बहुत चोरी की है..... ये यहाँ रहने के लायक नहीं है.....

करुणा की साक्षात् मूर्ति, भक्तवत्सल सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संतों को शान्त करते हुए बोले– 'अरे भाई! यह जैसा भी है– हमारा है। आप नाराज न हों, सब ठीक हो जायेगा। जब डॉक्टर के पास मरीज जाता है, तो बीमारी से छूटने के लिए जाता है। यदि डॉक्टर उस मरीज को ठीक नहीं कर पाता तो उसमें डॉक्टर की कमजोरी है। यह हमारे पास इतने समय से सेवा कर रहा है। किसी कारण वश इसे यह बीमारी लग गई है, तो कोई बात नहीं। इसने आश्रम की तन – मन से खूब सेवा की है। अब इसे यहाँ से निकाल दें? यह हमसे नहीं हो पायेगा! संत – महात्मा तो दयालु होते हैं। इसे अगर बीमारी ने घेरा है तो हम इसे ज्ञान रूपी औषधि देकर इसके विकार को भी अवश्य दूर कर देंगे।'

तपस्वी सिद्ध महापुरुषों के आशीर्वाद से तो बुरे से बुरी कर्म रेखा भी मिट जाती है। अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है। पापी पुण्यात्मा बन जाता है। दुर्जन सज्जन बन जाता है। ये होती है – सदगुरु देव भगवान की अनन्य कृपा! जिनके ऊपर कृपा कर दें – उसका जीवन सँवर जाता है। बस– फिर क्या था। स्वामी ने भक्त खियाराम के ऊपर कृपा दृष्टि कर दी – आशीर्वाद देते हुए जीवन को सात्विक बनाने के लिए सुंदर– सुंदर ज्ञानोपदेश दिया। श्री गुरु महाराज जी के मधुर वचनामृत पान कर उसका हृदय परिवर्तन हो गया। उसी क्षण भक्त खियाराम लज्जित होकर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में गिर पड़ा, 'हे प्रभु! हे कृपानिधान! आप मुझ पर दया करो... कृपा करो, मुझसे बड़ी भूल हो गयी है... मुझे क्षमा कर दें.... आज के बाद मैं कभी भी चोरी नहीं करूँगा।' उस दिन के बाद उसने कभी भी चोरी नहीं की। श्री गुरु महाराज जी की कृपा से उसका जीवन सँवर गया।

ऐसे क्षमाशील महापुरुषों को कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 30

भगवत् प्रेम रुपी जेल

भगवत् प्रेम को समझना बड़ा कठिन है। प्रेम के वशीभूत होकर परमात्मा भी खिंचे चले आते हैं। प्रेम की भाषा अलौकिक है – उसे समझना – जानना सरल काम नहीं। बहुत ही कठिन काम है। सर्वस्व समर्पित हो जाना ही प्रेम है। प्रभु परमात्मा के प्रेम में तो अनेक कष्ट, दुःख – दर्द सहन करने पड़ते हैं। सोने को जितना तपाओ, उतनी चमक अधिक होती है। इसी प्रकार प्रेम में भी सब कुछ सहन करना पड़ता है। त्याग – तपस्या, भक्ति से भरपूर जब किसी संत महापुरुष की यश – कीर्ति बढ़ती है, तो कुछ प्रतिद्वंद्वी लोग ईर्ष्यावश नीचा दिखाने का प्रयास करते है। कोई न कोई उपद्रव खड़ा करते हैं। जिससे संत महात्माओ की निन्दा हो.... उनको नीचा देखना पड़े... पर परमात्मा ऐसा नहीं होने देते..... आगे चलकर उनकी यश – कीर्ति को और अधिक बढ़ा देते हैं।

ऐसा अनादि काल से चला आ रहा है पर जिसे भगवान पर पूर्ण विश्वास व भरोसा होता है, उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। चाहे वो कितने भी यत्न कर ले। वैसे भी संत महात्माओं, भक्त – कवियों को जीवन में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा है..... ये सब भी भगवान की परीक्षा व लीलाऐं होती हैं.....

सिन्ध प्रदेश के भगवद् स्वरूप महायोगी तपस्वी सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी भगवत् भक्ति व सत्य सनातन धर्म का प्रचार – प्रसार कर रहे थे। उनकी यश और कीर्ति चहुँ ओर फैल रही थी। सनातनधर्मी व ज्ञान – ध्यान का सँचार जन – जन के हृदय को प्रभावित कर रहा था। पाप कर्म को छोड़कर अनेक भक्तजन शुभकर्म कर रहे थे। जहाँ पशुबलि जैसे हिंसक कर्म होते थे। वे सब अशुभ कर्म छोड़कर सात्विक कर्म करने लग गये थे। सभी के हृदय में ज्ञान – ध्यान भक्ति सँचारित होने लगी थी। ऐसा ही था सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की भक्ति – शक्ति का प्रताप। किन्तु स्वामी जी की कीर्ति – प्रतिद्वन्द्वी लोगों से देखी न गयी और तब उन्होंने अपयश हेतु समाचार पत्र में छपवा दिया कि स्वामी टेऊँराम जी महाराज व संत मण्डली को जेल में बंद कर दिया गया है.....

दूसरे दिन किसी भक्त ने स्वामी जी को समाचार पत्र दिखाकर कहा – 'भगवन्! देखो! ये क्या छाप दिया है – स्वामी जी व संत मण्डली को जेल में बंद कर दिया है। महापुरुष तो गुणग्राही होते हैं। सभी में से सार तत्त्व ही ग्रहण करते है। तब स्वामी जी ने बड़े ही मार्मिक भाव से कहा– 'हाँ भाई! इन्होंने तो बिल्कुल सही ही लिखा है – हम सच में ही भगवान के प्रेमरूपी जेल में बन्द हो गये हैं.... हम इस जेल से निकलना भी नहीं चाहते.... भगवान हमें सदैव अपने 'हृदय रूपी प्रेम के जेल' में ऐसे ही बाँधे रखे.... हम तो वहीं रहना चाहते हैं....' देखो – सत् महापुरुषों की सहनशीलता! कुछ भी ना कह कर उसमे से भी गुण ही ग्रहण किया। तब श्री गुरुदेव जी ने बड़ा ही सुन्दर भजन गाकर सुनाया–– **'प्रेम ने मुझको बाँध लिया है –विरह केरे बन्दखाने– मध मैखाने....'**

प्रभु प्रेम में निन्दा और दुःख तो मिलते ही हैं। परन्तु जब वे सभी दुःखों को सहन कर प्रभु की परीक्षा में पास हो जाते हैं। उसके बाद उनका नाम और यश – कीर्ति संसार में और अधिक फैल जाती है। वे अंत में सुख को पाकर पूजनीय संत महात्मा बन जाते हैं! ऐसे प्रभु प्रेम में दुःख व निन्दा को भी गले लगाने वाले सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 31

डूबे खिल्लू को बचाकर लाये – बालक टेऊँराम

समय–समय पर प्रभु परमात्मा संत–महात्मा के रूप में अवतरित होते है किन्तु हम मूढ़ अज्ञानी जीव उन्हें पहचान नहीं पाते। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी एक सिद्ध महापुरुष एवं ईश्वरीय अवतार थे।

बाल्यावस्था में खिल्लू नामक बालक को डूबने से बचाने वाला प्रसंग किसे याद न होगा। ये सभी प्रभु की विभिन्न अनन्त लीलाओं में से एक लीला थी। किन्तु देखा जाये तो स्वामी जी बाल समूहों के साथ सिन्धु नदी के पावन तट पर क्रीड़ा (रास) कर रहे थे। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण वृन्दावन में गोप–ग्वालों के साथ खेलते थे ! वैसे ही स्वामी जी ने भी अनेक लीलाएँ खण्डू गाँव में की थी.....

बालरूप में स्वामी जी की लीला का दृश्य भी अलोकिक था। इस अद्भुत क्रीड़ा को देखने के लिए सभी देवी – देवता भी बालकों का रूप धरकर उस रास में शामिल हो गए थे। ऐसी मनोहारी मधुर लीला कौन देखना नहीं चाहेगा? उनकी अलौकिक लीला को समझ पाना, हमारी समझ से कोसों दूर हैं। भगवान वरुणदेव के मन में भी बालरूप स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शनों की तीव्र उत्कंठा जाग्रत हुई। अब तो दोनों के मन में एक दूसरे से मिलने व दर्शनों की इच्छा जाग्रत हुई। प्रत्यक्ष दर्शन कराना उचित न समझा.....

तब दोनों महापुरुषों ने एक अद्भुत विचित्र लीला रची। 'खिल्लू नामक बालक' जो उस भगवद् रासलीला में खेल रहा था। अचानक वरुणदेव जी ने दर्शनों की लालसा से सिन्धु नदी का वेग बढ़ा लिया.... लहरें तेज कर दीं और आगे बढ़ा दीं.... बस! फिर जल धारा तट से बाहर निकाली और खिल्लू को अपने भीतर लेकर चली गई। जैसे ही खिल्लू नदी के अंदर गया। बच्चों में हाहाकार मच गया.... सभी चिल्लाने लगे.... चहुँ ओर सन्नाटा.... सभी चिन्तित होने लगे, अब क्या होगा? सभी बाल – गोपाल बहुत रोने – चिल्लाने लगे ! कौन समझे– स्वामी जी की इस अद्भुत बाल लीला को ? 'प्रियतम को प्रिय से मिलने की चाह थी' तो ऐसी लीला करनी ही थी। अब स्वामी जी अपने भक्त की रक्षा करने हेतु प्रसन्न मुद्रा में सिन्धु नदी के भीतर चले गए। स्वामी जी के अन्दर जाते ही सिन्धु नदी का जल चहुँ ओर प्रकाशमान हो गया.... अद्भुत तेजोमय ज्योति.... भगवान वरुणदेव जी प्रतीक्षारत खिल्लू को गोदी में लिये खड़े थे। बालक टेऊँराम जैसे ही नदी के अंदर पहुचे तो बड़े प्रसन्नचित होकर दोनों एक दूसरे को प्रेम भाव से निहारने लगे..... नयनों से नयन मिले.... अनोखा महासंगम और नयनाभिराम प्रेम विह्वल भाव.... दोनों देवता एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रसन्न होने लगे। प्रभु, बड़े समय बाद दर्शन हुआ है। कुछ समय ऐसे ही प्रेम – ज्ञान की वार्तालाप करके खिल्लू को स्वामी जी बाहर लेकर आ गए.....

ऐसी लीला देखकर सभी खण्डूवासी बड़े आश्चर्यचकित हो गये। सभी एक दूसरे को आश्चर्य से निहारने लगे। प्रभु तुम धन्य हो। 'खिल्लू के द्वारा दोनों महापुरुषों का प्रत्यक्ष रूप से दर्शन किया गया'! स्वामी जी ने यह लीला कर सभी को प्रभु सत्ता का भान करवाया! उसी समय सभी को विश्वास हो गया कि स्वयं प्रभु परमात्मा ही हमारे खण्डू गाँव में अवतार लेकर आये है.....

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 32

जमकर बरसे बदरा.....

संत – महापुरुष इस कलिकाल में भी समय समय पर अनेकों अद्भुत लीलाएँ करके प्रभु सत्ता का भान करवाते रहते हैं। ऐसे ही अवतार कोटि के लीला पुरुषोत्तम थे – युगपुरुष मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! जिन्होंने अपने भक्तिमय जीवन में अनेक लीलाएँ रचीं.....

एक समय टण्डा आदम में रहने वाला हीरालाल नामक स्वामी जी का एक भक्त था। जो सदैव संतों व श्री गुरू आश्रम की तन – मन से खूब सेवा करता था। उसके मन में एक इच्छा थी कि एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मेरे घर पर चरण पखारें.... वह भक्त सदैव स्वामी जी से यहीं प्रार्थना करता रहता था.....

श्री गुरु महाराज जी ने कहा – समय निकाल कर एक बार तुम्हारे घर पर अवश्य ही आएँगे।

ऐसे ही एक समय श्री गुरु महाराज जी भक्तिरस की मस्ती में मस्त बैठे थे। कौन जानता है सिद्ध महापुरुषों की अद्भुत लीला को तेज गर्मी का समय..... भगवान भास्कर की प्रचंडता..... तपती रेत..... गर्म हवाओं से सभी व्याकुल..... भरी दुपहरी का समय.....

श्री गुरु महाराज जी ने संत मण्डली व भक्तों से कहा – चलो अभी हम सब भक्त हीरालाल के घर चलते हैं। सभी संत हैरान। इतनी तीक्ष्ण गर्मी। लू की भरमार – पर स्वामी जी की आज्ञा थी। योगियों की तरह रमण करने वालों के लिए क्या धूप, क्या छाँव। अवधूती मस्ती का आलम!

श्री गुरु महाराज जी पूरी मण्डली सहित गाते–बजाते, भक्ति सरोवर में डूबे उस भक्त के घर की ओर चलते चले जा रहे थे। सभी पसीने से लथपथ – गर्मी – लू से बैचेन। तब सभी भक्तों व संतों ने स्वामी जी से विनम्र भाव से प्रार्थना की– 'हे प्रभु! गर्मी बहुत हो रही है, सूर्य देवता की तपत भी बहुत है। हम सभी बड़े व्याकुल हो रहे हैं। आप कृपा करो कि थोड़ा मौसम ठण्डा हो जाए। आप तो स्वयं परमात्मा के अंश हैं.....

श्री गुरु महाराज जी के भक्ति की तार परमात्म तत्त्व से एकाकार थी। भक्ति का अनोखा आलम, शरीर का भान नहीं, अलख निरंजन! उस आत्मानन्द के आनंद को कौन समझे।

स्वामी जी ने एकाएक तम्बूरे की तान को छेड़ते हुए – भक्ति भाव से सारंग राग का एक मधुर भजन गाया– – **'बादल करि आबादु– वसी हिन वेले...' 'कहे टेऊँ ही अर्जु अघाइजि– दुकर कटे तूं सुकरु बणाइजि, करि मुसीबत मादु।।'**

भजन में इतना रस और भक्ति भाव था। जो इन्द्र देवता भी अपने आप को रोक नहीं पाये। घनघोर घटा के साथ जमकर बदरा बरस पड़ी..... उस वक्त का दृश्य भी अलौकिक था.... जिसने प्रत्यक्ष देखा होगा, वह ही उसे जान सकता है। मौसम एकदम सुहावना हो गया.. बरखा रानी बरस रही थी... सभी भक्तों का तन – मन शीतल हो गया। स्वामी जी को इन्द्र देवता ने प्रणाम किया। ऐसी लीला देखकर सभी बड़े प्रसन्नचित हो गए।

ऐसे थे लीला पुरुषोत्तम जग के तारणहार अवतारी महापुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 33

पत्थर से निकल पड़ी जलधारा.....

संत – महात्मा सर्व शक्ति के मालिक होते है। जब चाहे जैसा चाहे लीला कर सकते हैं। ऐसे ही ईश्वरीय अवतार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनेक लीलाएँ समय – समय पर संतों – महापुरुषों व भक्तों ने प्रत्यक्ष रूप से देखीं गयी है।

एक समय की बात है सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली व कुछ भक्तों के साथ जंगल की सैर करने निकल पड़े। गर्मी अधिक थी। श्री गुरु महाराज जी तो तेज कदम चलते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। सारे संत व भक्तजन पीछे रह गए। केवल संत उद्धवदास जी स्वामी जी के पीछे – पीछे चल रहे थे। स्वामी जी अपनी मौज में चलते चले जा रहे थे। परमात्मा की मस्ती में मस्त – भक्ति का अनोखा आलम! पता नहीं वो अलौकिक मस्ती महापुरुषों को कौन सी है! इसे पहचाना नहीं जा सकता.....

फकीर खे ग़ोल्हण – खुदा खे ग़ोल्हण, फकीर खे सुञारण – खुदा खे सुञारण.....
फकीर जी सूरत – खुदा जी सूरत, फकीर राजी – अल्लह राजी।।

वे तो अल्लाह लोक के मालिक होते हैं। उनके लिये कुछ भी असंभव नहीं होता है। कब कौन सी लीला कर दें। उनकी लीला वे ही जानें! कुछ समय चलते – चलते स्वामी जी की दृष्टि पीछे की ओर गयी तो देखा – सभी संत – महापुरुष दूर रह गये थे। केवल संत उद्धवदास जी साथ थे।

तब संत उद्धवदास जी ने श्री गुरु महाराज जी से प्रार्थना की, 'हे भगवन्! मुझे बड़ी प्यास लगी है। आसपास में कोई तालाब, नदी, कुँआ नज़र नहीं आ रहे हैं – अब आगे चला भी नहीं जा रहा। कृपा करें – प्रभु! बहुत प्यास लगी है.....'

अब देखो! महापुरुष यहाँ कैसी लीला करते हैं! हमारी समझ से कोसों दूर....

श्री गुरु महाराज जी ने उद्धवदास जी से कहा – 'ये चट्टान के ऊपर रखा पत्थर हटाओ।' संत उद्धवदास जी समझ नहीं पा रहे थे कि इतना गहन जंगल – पानी का दूर – दूर तक कोई नामो निशान नहीं। परन्तु श्री गुरु महाराज जी कह रहे हैं इस पत्थर को उठाओ। पता नहीं, इसमें क्या रहस्य छुपा हुआ है? आज्ञा शिरोधार्य कर जैसे ही पत्थर को उठाया तो स्वतः ही वहाँ से 'जलधारा' निकल पड़ी..... संत उद्धवदास जी यह अद्भुत दृश्य देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ समझ नहीं पाये। उन्होंने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई। फिर स्वामी जी ने उनको आज्ञा दी कि इस पत्थर को पुनः उठाकर यथा स्थान रख दो, जैसे पहले रखा हुआ था।

कुछ समय बाद पुनः एक बार सब संत वहाँ गए तो क्या देखा – वहाँ किसी भी प्रकार का कोई जल धारा का स्त्रोत तक नहीं था। कहाँ से आया जल? कुछ अता–पता नहीं! आज तक उस तपस्वी महापुरुष की लीला को कोई नहीं समझ पाया। ऐसी अनेक लीलायें प्रत्यक्ष रूप में संतों – महापुरुषों ने स्वामी जी की देखीं।

दिव्य लीलाओं के साक्षात् स्वरूप आचार्य युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 34

चल पड़ी गरीब की चक्की

एक भक्त जिसकी आर्थिक स्थिति बड़ी कमजोर थी। वह गरीब चक्की चलाकर आटा पीसता और अपना जीवन निर्वाह करता था। रोजी रोटी कमाकर परिवार का पालन पोषण किया करता था।

एक बार उसकी चक्की चलाने की मशीन खराब हो गई। वह बड़ा चिन्तित हो गया कि अब वो अपना गुजारा कैसे करेगा? उसके पास इतने पैसे भी नहीं थे कि वो अपनी चक्की मशीन बनवा सके। किसी प्रकार गुरु महाराज जी की कृपा हो तो चक्की मशीन चल पड़े – ऐसा भाव लेकर वह रात में सत्गुरू स्वामी टेऊँराम बाबा जी की दरबार 'श्री अमरापुर स्थान' पर पहुँचा। दरवाजा बंद हो चुका था। उसके मन में गुरुदेव के प्रति सच्ची करुण पुकार थी और वह सच्चे हृदय से मुख्य द्वार पर तेज स्वर में श्री गुरु महाराज जी को पुकारने लगा – 'ओ स्वामी टेऊँराम बाबा– २..! मुझ गरीब की पुकार सुन..... मेरी चक्की चला दे..... मै बहुत गरीब हूँ..... चक्की मशीन बनवाने में असमर्थ हूँ। बिना चक्की के जीवन निर्वाह कैसे होगा? परिवार कैसे पालूँगा? आप तो दयालु हैं – सभी पर दया करते हैं। मुझ गरीब पर भी कृपा करो। मैं तो आपका नाम सुनकर ही आया हूँ। आप ने सभी के मनोरथ सिद्ध किये हैं..... जो भी जैसी पुकार लेकर आया है, वह पूरी हुई है..... आपके द्वार से आज तक कभी कोई खाली नहीं गया है।'

वह भक्त ऐसी कारुणिक पुकार दरवाजे पर कर रहा था। अंत में जाते – जाते श्री गुरु महाराज जी को अपना समझ कर अपनत्व भरे स्वर में कहता गया, कि– 'ओ बाबा साईं टेऊँराम! अगर कल मेरी चक्की न चली न, तो तेरी दरबार भी नहीं चलेगी.....' ऐसी विश्वास भरी पुकार करके वह भक्त अपने घर चला गया.....

अंतर्यामी सर्वशक्तियों के मालिक युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने उस अनोखे भक्त की पुकार सुन ली.....

प्रातःकाल दुकान खोलकर उसने सच्चे हृदय भाव से स्वामी जी को पुकार की और 'सत्नाम साक्षी' महामंत्र बोल कर अपनी चक्की मशीन चलाई तो क्या देखा, 'अरे। चक्की चालू हो गई.....' वह बड़ा गद्गद् हो गया। श्री गुरु महाराज जी की ऐसी आश्चर्य जनक शक्ति देखकर वह खुशी से नाचने लगा। उस गरीब की खुशी का ठिकाना ना रहा। मन ही मन स्वामी को कृतज्ञ भाव से बार – बार प्रणाम करने लगा। धन्य धन्य हैं मेरे बाबा टेऊँराम जी महाराज! कैसे चली चक्की – किसने चलायी – उसकी लीला वो ही जाने! अब तो उसका विश्वास और भी अधिक दृढ़ हो गया। वह अब नित्य प्रति श्री गुरु महाराज जी की दरबार 'श्री अमरापुर स्थान' के दर्शन – सेवा करने जाया करता था।

ऐसी होती है – महापुरुषों की अनन्य कृपा। भक्त सच्चे हृदय व करूणा भाव से पुकार करे – तो सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उनकी पुकार अवश्य सुनते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 35

महापुरुषों की सहनशीलता

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली को साथ लेकर इकतारा हाथ में लिये सैलानियों की तरह देशाटन किया करते थे। जगह – जगह सत्संग सरोवर में भक्तों को हरिरस की ज्ञानगंगा में डुबकी लगवाकर अमृतपान करवाते थे। जिससे जीवो का कल्याण हो सके। जहाँ जैसा रूखा – सूखा भोजन – प्रसाद मिलता, वह भगवान का प्रसाद समझकर ग्रहण करते थे।

एक समय कुछ लोगों ने प्रेममूर्ति भक्त वत्सल सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की परीक्षा लेने हेतु उनको भोजन पर आमंत्रित किया। संत – महापुरुषों का क्या! जहाँ जैसा मिल जाये, भगवत् – प्रसादी समझकर खा लेते हैं। सत्पुरुष तो भजनानंद की मस्ती में मस्त रहते हैं। उन लोगों ने परीक्षा लेने हेतु भोजन में नमक नहीं डाला और भोजन की व्यवस्था भी ठीक तरह से नहीं की थी। स्वामी जी का क्या! वे तो संत मण्डली के साथ प्रेम से भोजन – प्रसाद खाकर अपने आसन पर जाकर विश्रामी हुए। तब उन्होंने देखा कि संतों में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो दूसरे दिन वे सभी लोग श्री गुरु महाराज जी के पास आये। दण्डवत् प्रणाम कर हाथ जोड़कर क्षमा याचना माँगने लगे – महाराज जी! हमें माफ कर दीजिए – हमने परीक्षा लेने के उद्देश्य से आपके भोजन में नमक नहीं डाला था, जिससे भोजन अलूणा हो गया! व्यवस्था भी ढंग से नहीं की थी। अतः हमें क्षमा करें। हमसे बड़ी भारी भूल हो गयी है। हमने सोचा कि संत – महात्मा अलूणा भोजन स्वीकार नहीं करेंगे, क्रोधित होंगे, नाराज होंगे, गुस्सा होंगे। किन्तु यहाँ तो किसी ने भी कोई भोजन की शिकायत नहीं की। सभी प्रेम से भोजन–प्रसाद खा गए..... न ही कोई गुस्सा हुए.... स्वामी जी! आप धन्य धन्य हैं। हम अज्ञानी जीव हैं, जो आपको पहचान नहीं पाते। आप तो साक्षात् ईश्वरीय अवतार हैं। आपको समझ पाना बड़ा कठिन है ... आपके श्री चरणों में शत् शत् नमन!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 36

रेत के कण – बने मिठाई के मण

परिपूर्णता को प्राप्त होने वाले संत – महापुरुषों के लिये कुछ भी कार्य असंभव नहीं होता है। भजनानंद की मस्ती – अलौकिक आनंद – भक्ति का अनोखा आलम! जो बात मुख से निकल जाये वह अटल सत्य – चाहे वो न होने वाली बात ही क्यों न हो। ऐसी अद्भुत विलक्षण शक्ति के भण्डार होते हैं तपस्वी संत – महापुरुष! इन्हीं तथ्यों को प्रत्यक्ष रूप से हमारे योगी स्वरूप सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सिद्ध किया !

सिन्ध प्रदेश के टण्डाआदम में स्थित युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का विशाल रेत के ऊपर बना 'श्री अमरापुर दरबार' 'डिब' जिसमें चहुँ ओर रेत ही रेत थी। दरबार पर संत – महात्मा और सेवाधारी सेवा किया करते थे।

एक समय श्री गुरु महाराज जी भजनानंद की मस्ती में थे। वैराग्य का अनोखा आलम मुखमण्डल पर शोभित हो रहा था। आश्रम में चारों ओर भ्रमण कर रहे थे – दोपहर का समय था। भोजन की घंटी बजी। सभी पंक्तिबद्ध कतार में भोजन – प्रसादी ग्रहण करने हेतु बैठे थे। यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। उस वक्त पक्का स्थान बना हुआ नहीं था। ऐसे में टीले के ऊपर लीप – पोतकर उसे अस्थायी भोजनालय का रूप दिया गया था। आस पास रेत ही रेत होती थी। आंधी तूफान आने पर चारों ओर रेत ही रेत की चादर बिछ जाती थी। उसी समय स्वामी जी भी लाठी लेकर आश्रम की देख रेख कर रहे थे। भोजन की घंटी बजने पर सभी संत – महात्मा कतारबद्ध बैठे थे। उसी समय स्वामी जी भी वहाँ पहुँचे। सभी संत सेवादारी स्वामी जी को देखकर प्रसन्नचित्त होकर उठ खड़े हुए। सभी ने दण्डवत प्रणाम किया।

श्री गुरु महाराज जी कब कौन–सी लीला करते हैं। कुछ अता पता ही नहीं। प्रसन्नचित्त मुद्रा में सभी को बैठने का संकेत किया। भोजन परोसने वाले सेवादारियों ने संत – महात्माओं को थाली देकर भोजन – प्रसादी को परोसा। सभी को भोजन मिल चुका था। मंत्रोच्चार के पश्चात् भोजन – प्रसादी शुरू होने वाली थी। उसी समय तूफान की तरह तेज हवा चली। चारों ओर रेत फैल गई। जहाँ संतजन बैठे हुए थे, उनके भोजन की थालियों में रेत पड़ गई। अब संतजन भोजन खाने को मना करने लगे, बोले, इस भोजन में रेत पड गई है अतः रेत पड़ा भोजन हम कैसे खायें?

तब श्री गुरु महाराज जी ने अद्भुत लीला रची। स्वामी जी ने बड़े ही मृदुल भाव से कहा– 'आप सब भगवान का प्रसाद समझकर इसे खायें..... आप समझना कि ये रेत नहीं मीठा प्रसाद है.....' – देखो! श्री गुरु महाराज जी की वाणी में थी कैसी शक्ति! ऐसा भाव बनाकर सभी ने भोजन – प्रसादी खाना शुरू किया। जैसे ही पहला कौर मुख में रखा तो क्या देखा – सचमुच भोजन में एक भी रेत का कण नहीं दिखाई दिया। सारे चावल मीठे लगने लगे। यह देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए! बड़े स्नेह भाव से संत – महात्मा भक्तजनों ने भोजन – प्रसादी प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण की। ये कैसी लीला थी । कोई नहीं समझ पाया.....

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 37

साईं दिना की अफीम आदत छुड़वाना

संत – महात्माओं की कृपा से अनेक जीवों का जीवन सँवर जाता है। जीवन जीने की कला भी संत – महापुरुष ही सिखाते हैं। संतों के उपदेश व उनका सानिध्य मनुष्य का जीवन परिवर्तित कर देते है। कैसा भी मूढ़ – अज्ञानी, पापी, व्यसनी क्यों ना हो – जो संत शरण ले लेता है..... उसका जीवन उज्ज्वल हो जाता है !

साईंदिना नाम का एक सरकारी कर्मचारी था। वह सरकारी जंगल की रखवाली करता था। किन्तु कुछ बुरी आदतों (नशीली वस्तुओं) का आदी हो गया था। इन खराब आदतों के कारण घर – परिवार वाले व स्वयं भी बहुत परेशान रहता था। इन दुर्व्यसनों पर सरकारी वेतन भी पूरा खर्च कर देता था। पर क्या करता, कहावत सत्य ही है – 'आदत बुरी बला है।' बुरी आदत से कैसे बचे? अफीम का सेवन छोड़ता तो बीमार पड़ जाता। अपनी इस दुर्दशा से मन में बड़ा दुःखी होता था। इस कारण उसका पूरा परिवार भी बहुत परेशान था।

एक समय करुणा सागर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस शहर में पहुँचे, जहाँ वह रहता था। उसी शहर में श्री गुरु महाराज जी का सत्संग – प्रवचन हुआ। वहाँ के सभी नर – नारी स्वामी जी के सत्संग से प्रभावित हुए। सारी संगत मार्मिक सत्संग से स्वामी जी की ओजस्वी अमृतवाणी में पापकर्म से बचने व पुण्य कर्म, शुभ कर्मरूपी प्रसंग सुनकर भाव विभोर हो गई। इससे वहाँ भक्तजनों में श्री गुरु महाराज जी के प्रति अगाध श्रद्धा जागृत हो गई। उसी सत्संग सरोवर में एक दिन 'साईंदिना' भी बैठा था।

- सत्संग समाप्ति के बाद साईंदिना रुदन भाव से स्वामी जी के पास जाकर प्रार्थना करने लगा– 'हे फकीर साईं! मेरे में अनेक बुरी आदतें हैं। मुझे अफीम खाने की लत लग गयी है और मैं इससे छुटकारा भी पाना चाहता हूँ। हे साईं! आप कृपा करो, जिससे मेरी यह बुरी आदत छूट जाए। मैं अपना जीवन अच्छी तरह व्यतीत करना चाहता हूँ। मेरा यह जीवन व्यर्थ जा रहा है। हे प्रभु! दया करके मेरा जीवन सँवार दो.....'

उसके दिल से निकली पुकार स्वामी जी ने सुन ली। महापुरुषों का जीवन दूसरों के उद्धार के लिए ही होता है। उस समय स्वामी जी भजन की मस्ती में मस्त बैठे थे। तब स्वामी जी ने 'खबड़' (जंगली पौधा) के पत्ते मुट्ठी भर कर दे दिए और कहा – 'जिस समय अफीम खाने की इच्छा हो तो उस समय ये दो–तीन पत्ते खा लेना... प्रभु करेगा, आप बीमार नहीं पड़ोगे....' बस! फिर तो महापुरुषों का आशीर्वाद रूपी प्रसाद मिल गया और गुरु कृपा से साईंदिना का सब नशा – पता धीरे – धीरे छूट गया। वह एकदम स्वस्थ हो गया। तब वह मुसलमान स्वामी जी से नाम दान की दीक्षा लेकर शिष्य बन गया और साथ ही आश्रम की खूब तन – मन से सेवा करने लगा।

संत – महापुरुषों की हर बात में कोई न कोई राज होता है। वे सर्व शक्ति सम्पन्न होते हैं। कब किसके ऊपर महापुरुषों का आशीर्वाद बरस जाए। साधारण व्यक्ति की समझ से परे है। एक जंगली पौधे से अफीम जैसी बुरी आदत को छुड़ाने का सामर्थ्य तो संत – महापुरुषों के पास ही हो सकता है। उनकी अद्भुत लीला को समझ पाना बड़ा मुश्किल है। ऐसे थे जीवों के उद्धारक सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 38

भक्तों व संतों के रखवाले– श्री भगवान

भगवान को जो सर्वस्व अर्पण कर देता है। भगवान उसकी सदैव रक्षा करते हैं। '**भक्तनि जा भगवान – हरदम कारज संवारे**' कितनी भी विपत्ति, कष्ट, संकट आ जाए पर भगवान किसी न किसी रूप में आकर भक्त की रक्षा अवश्य ही करते हैं और भक्तो का मान बढ़ाते हैं।

सिन्ध टण्डाआदम में रेतीले टीले के ऊपर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा 'श्री अमरापुर दरबार' का निर्माण कार्य चल रहा था। चारों ओर रेत ही रेत थी। तब वहाँ छोटी पर्ण कुटियाएँ प्रारम्भ में बनाई गई थीं। सेवाधारियों सहित स्वामी जी भी दिन भर रेत के टीले पर ही निवास किया करते थे। सारा सामान, बर्तन आदि भी वहाँ खुले पड़े रहते थे।

एक दिन रात के समय कुछ चोर वहाँ आए और सारे बर्तन, खाद्य सामग्री चुरा कर ले गए। जब संत व सेवाधारियों ने स्वामी जी से कहा– 'स्वामी जी! आपकी आज्ञा हो तो हम चोरों को ढूँढ़ कर लावें.....'

तब स्वामी जी ने मंद मंद मुस्कराकर कहा – 'आप लोग शांत होकर बैठ जाओ, चिन्ता न करो। देखो! भगवान अभी क्या – क्या रंग दिखलाते हैं, कैसी – कैसी लीला करते हैं!' अब संत – महात्माओं व सेवकों के पास खाने – पीने के लिए भी कुछ नहीं बचा था और ना ही बनाने के लिए बर्तन आदि सामान.... सभी भूखे – प्यासे....., मन में यही विचार कर रहे थे कि अब भोजन कैसे मिलेगा? पर जिसे भगवान पर पूर्ण भरोसा होता है – उसे भला किस बात की चिंता?

कुछ समय बाद एक ब्राह्मण महिला जिसका नाम लक्ष्मी था। वह भोजन तैयार करके ले आई और संतों को दिया – बर्तन भी साथ ही रख कर चली गयी.... संत– महात्माओं ने उस माता से पूछा– 'आप कौन हैं और भोजन किसने भेजा है? तब माता ने उत्तर दिया – मेरा नाम लक्ष्मी है, मैं ब्राह्मण जाति की हूँ। आज प्रातःकाल मेरी अर्न्तआत्मा से आवाज आई कि पास में रहने वाले संत – महात्माओं को भोजन – प्रसाद खिलाओ..... तभी मै लेकर आई हूँ..... आप आराम से भोजन खाओ....'

यह देखकर सभी विस्मित हो उठे। सभी संत – महात्मा एवं भक्तजन स्वामी जी को हाथ जोड़कर कहने लगे – 'हे प्रभु! आपकी महिमा अपरम्पार है। हम अज्ञानी आपकी लीला को नहीं समझ सकते।' भोजन कहाँ से आया– किसने भेजा! उसकी लीला वे ही जाने! आज तक बाबा जी को कोई नहीं समझ पाया....

ऐसी अनन्त लीलाओं के दाता युगपुरुष सत्गुरु साईं टेऊँराम बाबा जी को हमारा शत – शत नमन!

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 39

ऐसो को उदार जग मांहीं....

संत – महात्मा का अवतार तो जीवों की रक्षार्थ हेतु होता है। संत – महात्मा अपने उदार चित्त से असंख्य जीवों का कल्याण करते हैं। इसी प्रकार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी बहुत उदार चित्त वाले थे। जो भी उनकी शरण में आता, उनका जीवन ही सँवर जाता था।

एक समय भगवद् स्वरूप सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टण्डेआदम सिन्ध के आश्रम में विराजमान थे। स्वामी जी अधिक से अधिक भगवद् भक्ति में निमग्न और ध्यानस्थ होकर ब्रह्मचिंतन में स्थित रहते थे। अनेक सेवादारी आश्रम में सेवारत रहते थे।

उस समय एक बुजुर्ग माता श्री गुरु महाराज जी के पास आई और हाथ जोड़कर कहने लगी 'स्वामी जी! मुझे आज अपने वस्त्र धोने की सेवा दें।' स्वामी जी उस माता से कहने लगे – 'आप आश्रम की सेवा करो। आश्रम की सेवा यानी हमारी सेवा है। किन्तु बार – बार विनती करने पर स्वामी जी ने अपने वस्त्र उस माता को धोने के लिए दे दिये।

स्वामी जी के वस्त्र धुलाई की सेवा प्राप्त करके माता बड़ी प्रेम विह्वल हो गई। बड़ी प्रसन्नचित्त होने लगी। गद्गद् होने लगी। प्रेमानुरागी होकर माता ने बिना कुछ सोचे – समझे वस्त्रों को देखा भी नहीं। बस! खुशी के आँसू छलकाते असीम प्रसन्नता से प्रेम पूर्वक वस्त्रों को धो रही थी। किन्तु थोड़ी देर बाद माता जी का हाथ वस्त्र (चोले) के जेब की ओर लगा। देखा तो उस वस्त्र में 10 रुपये का नोट पड़ा हुआ था। माता जी ने नोट निकाला तो वह पूरा खराब हो चुका था (उस समय 10 रुपये की कीमत बहुत अधिक हुआ करती थी)।' यह देखकर उसे बहुत पछतावा होने लगा। अरे! मुझसे ये क्या हो गया? बहुत बड़ी भूल हो गयी – बिना देखे ही जल्दी जल्दी में मैने वस्त्र धो दिये..... बड़ी दु:खी होने लगी..... अपने आपको कोसने लगी..... सोचने लगी, स्वामी जी ने पहली बार मुझे अपने वस्त्र दिये और ये मैंने क्या कर दिया। ऐसा सोच सोच कर वह बिचारी बहुत रोने लगी।

किन्तु महापुरुषों के लिये सांसारिक वस्तुओं व पैसों का क्या मूल्य! ये सब तो तुच्छ वस्तुएँ हैं। वे तो सर्व शक्तिमान थे। माता जी का तो अनन्य प्रेम था। प्रेम में पैसों का मूल्य नहीं होता।

अब माता डरते–डरते श्री गुरु महाराज जी के पास आई और कहने लगी, स्वामी जी! मुझे क्षमा कर दो। मैंने बिना देखे, सोचे – समझे वस्त्र धो लिये। उसमें आपके चोले की जेब में रखा दस का नोट भी खराब हो गया। मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। मुझे माफ कर दो.....'

तब स्वामी जी बड़े ही स्नेहसिक्त प्रेम भाव से कहा – अरे! माता! बस, इतनी सी बात – मात्र 10 रुपये के लिये इतनी चिन्ता करती हो? संसार में धन – पदार्थों का महत्व नहीं, प्रेम का महत्व है। ये क्षणिक वस्तु है। ये तो आती जाती रहती है। आपका स्नेह व प्रेम देखकर हम बहुत प्रसन्न हैं। तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। सदैव प्रसन्नचित्त रहो।' ऐसे में मुख से निकल पड़ता है – 'ऐसो को उदार जग मांहिं.....'

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 40

गुल सतार को मिला नवजीवन दान...

एक समय की बात है सिंध में प्रातःकाल आचर नामक मुस्लिम (आचाण बलोची) अपने पुत्र गुलसतार को खाट पर लिटाकर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास श्री अमरापुर दरबार ले आया और कहने लगा – 'हे फ़क़ीर साईं! मुझ गरीब पर रहम कीजिए। मेरा बेटा मुझे बख़्श (जीवनदान) दीजिए। सभी डॉक्टर, वैद्य – हकीमों ने जवाब दे दिया है। वे कहते हैं कि आपके बेटे के पास अब कुछ ही दिन का समय शेष है। अतः हे भगवन्! हमारी रक्षा करो। हम आपकी चरण – शरण में आये हैं..... मेरे पुत्र को जीवनदान दो.....' पति – पत्नि दोनों श्री गुरु महाराज जी के श्री चरणों में रोते बिलखते बार – बार कातर स्वर में प्रार्थना करने लगे।

श्री गुरु महाराज जी भजन – कीर्तन की मौज में थे। स्वामी जी ने कहा– 'आप घबराओ मत! मालिक (परमात्मा) सब भली करेंगे। चिंता मत करो। आप लोग भण्डारे का भोजन– प्रसाद खाओ।' किन्तु उस दम्पति का रो – रोकर बुरा हाल हो रहा था। उन्होंने कहा– 'हे फकीर साईं। हमारे लिए तो आप ही मालिक (खुदा) हो। आपने न जाने कितनों के कष्ट–दुःख दूर किये है। हमने आपकी बहुत लीलाएँ सुनी व देखी हैं। आप ही हमारे पुत्र को नया जीवनदान दे सकते हो। आचाण बलोच ने स्वामी जी से कहा– 'मेरा पुत्र आपके सामने ही खाट पर सोया हुआ है।' तब स्वामी जी कुछ देर के लिये ध्यान मग्न हो गए। फिर उन्होंने पूछा, क्या नाम है इसका? बलोच दम्पति ने कहा– 'गुल सतार' उसी समय स्वामी जी ने उस बालक गुल सतार पर अपनी कृपा दृष्टि बरसायी..... उसके मस्तक पर वृहद् हस्त रखकर कहा– 'बेटा गुल सतार! बोलो – सत्नाम साक्षी.... सत्नाम साक्षी'.... स्वामी जी के तो कहने की देरी थी। बस फिर क्या था। बालक उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर श्री गुरु महाराज जी को 'सत्नाम साक्षी .....' कहने लगा। स्वामी जी ने जल अभिमंत्रित कर गुल सतार को पिलाया और जल पीते ही बालक एकदम से स्वस्थ व निरोगी हो गया और शीघ्र उठकर स्वामी जी के श्री चरणों में प्रणाम किया। तब नवजीवन प्राप्त गुल सतार को स्वामी जी ने 'गुलशन' पुकारकर उसका नया नामकरण किया। स्वामी जी के आशीर्वाद से उसे जीवन दान मिल गया।

कोटि कोटि वन्दन! धन धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.